बाइबल की कलीसिया

तेरह पाठों की बाइबल अध्ययन श्रृंखला

Thirteen Lessons Correspondence Course

लेखक

जे. सी. चोट

अनुवादक

सनी डेविड

CHURCH OF CHRIST

P.O. Box 4398

New Delhi-110019

प्रकाशकः
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

Church of The Bible
by J.C. Choate

Published by :
CHURCH OF CHRIST
P.O. Box-4398
New Delhi-110019

Printed at Shree Rameshwar Printers, New Delhi-110064

भूमिका

नए नियम में कलीसिया का वर्णन अनेक स्थानों पर हुआ है। प्रभु ने अपने वचन के द्वारा बहुत स्पष्टता से हमें बताया है कि उसने केवल एक कलीसिया की स्थापना की, और यह भी कि कलीसिया क्या है।

यद्यपि आज संसार में लगभग कई सौ विभिन्न प्रकार की कलीसियाएं वर्तमान हैं, व इनमें से प्रत्येक कलीसिया के निजी नाम, धर्मसार, शिक्षाएं, इत्यादि है। किन्तु परमेश्वर का वचन आज भी एक कलीसिया के विषय में शिक्षा देता है।

अब यह प्रश्न उठता है कि ये बहुत सारी विभिन्न कलीसियाएं कहां से आई, व इनका आरंभ कैसे हुआ? यह और ऐसे ही अन्य प्रश्नों को बहुत ही सरल ढंग से समझाने के लिये प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक की भाषा बड़ी सरल तथा रुचिकर है। प्रत्येक विषय का वर्णन पवित्रशास्त्र के आधार पर किया गया है।

मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक पाठक को बाइबल की एक कलीसिया के विषय में जानकारी प्रदान करने में सहायता करेगी। मुझे आशा है कि यह पुस्तक उनके लिये जो अंधकार में है ज्योति का स्रोत होगी, और उस परमेश्वर पिता की महिमा का कारण बनेगी जो अपने वचन के द्वारा एक दिन हम सब का न्याय करेगा।

अनुवादक

विषय-सूची

भूमिका	3
पाठ एक - कलीसिया का अर्थ	7
पाठ दो - कलीसिया का आगमन	13
पाठ तीन - कलीसिया की स्थापना	19
पाठ चार - कलीसिया की पहचान	25
पाठ पांच - कलीसिया का नाम	31
पाठ छः - कलीसिया का संगठन	37
पाठ सात - कलीसिया के सदस्य कैसे बनें?	43
पाठ आठ - कलीसिया की उपासना	51
पाठ नौ - कलीसिया का कार्य	57
पाठ दस - कलीसिया की एकता	65
पाठ ग्यारह - कलीसिया का धर्मसार	71
पाठ बारह - कलीसिया का इतिहास	77
पाठ तेरह - वर्तमान कलीसिया	85

पाठ एक
कलीसिया का अर्थ

कोई भी व्यक्ति इससे इंकार नहीं करेगा कि बाइबल एक कलीसिया के विषय में बतलाती है। परन्तु किस की कलीसिया? कौन सी कलीसिया? कैसी कलीसिया? ये और इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों के उत्तर हमें बाइबल में से मिलते हैं, परन्तु सबसे पहले हम यह मालूम करें कि कलीसिया क्या है? व इसे ठीक से समझने के लिये आरंभ में हम ये देखें कि यह क्या नहीं है? जिस कलीसिया के विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं वह कैथलिक, प्रोटेस्टैन्ट या यहूदी नहीं है। वह साम्प्रदायीक अथवा बहु-साम्प्रदायीक नहीं है। वह एक राजनीतिक संगठन या कोई सामाजिक संगठन नहीं है, और न ही वह ईंटों का बनाया हुआ एक सभा-घर है। अब यदि इनमें से यह कुछ भी नहीं है, तब यह क्या है? अधिकांश लोग कलीसिया के विषय में सत्य को नहीं जानते, वे यह भी नहीं जानते कि कलीसिया क्या है। परिणाम स्वरूप वे नहीं समझते कि इसका उद्देश्य, महत्व, और कार्य क्या है। परन्तु बाइबल स्पष्टता से यह सब बतलाती है। कलीसिया, यह शब्द यूनानी भाषा में के एक शब्द एक्कलीसिया से लिया गया है व जिसका अर्थ है "बुलाए हुए।" तदनुसार, कलीसिया बुलाए हुए लोगों का एक झुंड है, वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। (कुलुस्सियों 1:13)। यह मसीह की आत्मिक देह है (1 कुरिन्थियों 12: 27), उन सब से मिलकर बनी हुई जिन्होंने मसीह की आज्ञाओं को माना है (इब्रानियों 5:8,9), और इसलिये उससे उद्धार प्राप्त करके उसी के द्वारा कलीसिया में मिलाए गए हैं। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:47)।

दूसरी तरह से हम इसे यूं कह सकते हैं कि कलीसिया मसीह के अनुयायीयों से मिलकर बनी हुई है।

कलीसिया शब्द बाइबल में हमें दो भाव से मिलता है। पहले, इसे सार्वदेशिक भाव में कहा गया है। यीशु मसीह का यही उद्देश्य था, जब उसने कहा, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। बाइबल में और भी बहुत से स्थानों पर कलीसिया शब्द का उल्लेख इसी प्रकार से हुआ है। कलीसिया को सार्वदेशिक भाव में कहने का अभिप्राय यह है कि जहां भी संसार में कलीसिया हो, यदि वह बाइबल की कलीसिया है, तब यह वही कलीसिया है जिसे यीशु मसीह ने बनाने को कहा। दूसरे, इसे स्थानीय भाव में कहा गया। उदाहरणार्थ, जब पौलुस रोम में कलीसिया को लिख रहा था, तब दूसरी मंडलियों का उल्लेख करते हुए, उसने कहा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। वह विभिन्न कलीसियाओं के विषय में नहीं कह रहा था, साम्प्रदायिक रूप से, परन्तु उसका अभिप्राय प्रभु की कलीसिया की अन्य स्थानीय मंडलियों से था। इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए, परमेश्वर के वचन में हम पढ़ते हैं, कुरिन्थुस में की कलीसिया, थिस्सलुनीकियों में की कलीसिया, इत्यादि। (1 कुरिन्थियों 1:2, 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; प्रकाशितवाक्य 1:11)। बहुतेरे लोगों को इसे समझने में कठिनाई होती है क्योंकि कलीसिया के बारे में केवल साम्प्रदायीक भाव में विचार करने के वे आदी हो चुके हैं। परन्तु परमेश्वर के वचन में एक भी सम्प्रदाय के विषय में आप नहीं पढ़ सकते। **उक्त** पदों में अन्य स्थानों में की मंडलियों का वर्णन हुआ है और विभिन्न स्थानों में प्रत्येक मंडली प्रभु की कलीसिया है, परन्तु वे सब एक साथ मिलकर सार्वदेशिक कलीसिया होती है। इसे कोई भी

सरलता से समझ सकता है यदि साम्प्रदायिकता को भूलकर बाइबल की ओर फिरे, और उसी प्रकार से इसे देखने का प्रयत्न करे जिस प्रकार से प्रभु ने इसे दिया।

कलीसिया का अर्थ और अधिक समझने के लिये परमेश्वर के वचन में से देखें, और ध्यान दें कि बाइबल बतलाती है कि कलीसिया:

1. **मसीह की देह है।** यह मसीह की आत्मिक देह है, और मसीह इसका सिर है। (इफिसियों 5:23)। केवल एक ही देह है। (इफिसियों 4:4)। और यह एक देह एक कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)।
2. **परमेश्वर का घर है।** परमेश्वर के वचन में घर का अभिप्राय परिवार से है, इससे हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि कलीसिया परमेश्वर का परिवार है। 1 तीमुथियुस 3:15 में पौलुस कहता है कि परमेश्वर का घर जीवते परमेश्वर की कलीसिया है। परमेश्वर पिता है, और हम उसकी संतान है। (गलतियों 3:26, 27; इफिसियों 1:3)।
3. **परमेश्वर का राज्य है।** राज्य एक राजा की ओर संकेत करता है, और तदनुसार यीशु मसीह राजा है। (प्रकाशितवाक्य 17:14)। परन्तु, यदि वह राजा है तब राज्य का होना निश्चित है, और वह वर्तमान है। (प्रेरितों 8:12)। हम उसकी प्रजा है, समस्त संसार उसकी सीमा है, और नया नियम उसकी व्यवस्था अर्थात् **विधान** है। यह कलीसिया है (मत्ती 16:18, 19)।
4. **प्रभु की दाख की बारी है।** यीशु मसीह दाखलता है और व्यक्तिगत रूप से सब मसीही उसकी डालियां है। (यूहन्ना 15:1-8)। यहां अभिप्राय है दाख की बारी में काम करना और प्रभु के लिये फल लाना।

इस प्रकार से कलीसिया का अर्थ स्पष्ट हो गया। इस विषय में परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अध्ययन कीजिए, और स्वयं ही देखिये कि बाइबल क्या शिक्षा देती है। यदि कलीसिया के विषय में आप उस प्रकार से देखने का प्रयत्न करेंगे जैसे कि परमेश्वर चाहता है, तब आप के सब विचार और भाव बदल जाएंगे, और कदाचित् आप का जीवन भी।

प्रश्न

लिखिए हाँ या नहीं :

1. बाइबल एक कलीसिया के लिये बतलाती है ....
2. कलीसिया कैथलिक है ....
3. अधिकांश लोग कलीसिया के विषय में सत्य को जानते हैं ....
4. बाइबल में कलीसिया शब्द का उल्लेख केवल एक भाव से हुआ है ....
5. यीशु मसीह ने कहा कि वह अपनी कलीसियाएं बनाएगा ....
6. आसिया की सात कलीसियाओं का तात्पर्य सात विभिन्न साम्प्रदायों से है ....
7. कलीसिया मसीह की देह है ....
8. केवल एक ही देह है.....................
9. मसीह कलीसिया का सिर है.....................
10. राज्य भविष्य में आएगा ....

सही उत्तर लिखिए :

1. कलीसिया क्या नहीं है?
   ....
   ....
2. कलीसिया शब्द कौन से यूनानी शब्द से लिया गया है?
   ....
   ....
3. कलीसिया किन से मिलकर बनी हुई है?
   ....
   ....

4. कौन से दो भावों में कलीसिया शब्द का उल्लेख हुआ है?
....
....

5. किस ने कहा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा?
....
....

6. उसने कितनी बनाई?
....

7. आसिया की सात कलीसियाओं का अर्थ क्या है?
....
....

8. देह कितनी है?
....

9. राजाओं का राजा कौन हैं?
....
....

10. प्रभु की दाख की बारी में हमें क्या करना है?
....
....

निम्नलिखित की संक्षिप्त परिभाषा दीजिए :

1. एक्कलीसिया ....
....
2. मसीह की देह ....
....
3. परमेश्वर का घर ....
....
4. परमेश्वर का राज्य ....
....
5. प्रभु की दाख की बारी ....
....

पाठ दो
कलीसिया का आगमन

कलीसिया के बनने में थोड़ा-सा समय नहीं लगा। इसके लिये योजना बनाई गई, भविष्द्वाणियां की गई, प्रतिज्ञा की गई, और तब यह बनी। बाइबल स्पष्टता से यह सब बतलाती है।

पहले, कलीसिया परमेश्वर के मनोभाव में थी। यह बात पौलुस ने मसीहियों को इफिसुस में बतलाई। उसने कहा, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र, और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया।" (इफिसियों 1:3-6)। ध्यान दें कि वह इफिसुस में कलीसिया से बात कर रहा है, और उसने कहा कि परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले उन्हें चुन लिया था। इसका अर्थ यह हुआ कि संसार के बनाए जाने से पहले ही से परमेश्वर कलीसिया के विषय में विचार कर रहा था। अर्थात् उस समय वह इसकी योजना बना रहा था, और इसलिये इसका आरंभ परमेश्वर के मन में हुआ। अब, जिसकी योजना परमेश्वर ने आरंभ में अर्थात् जगत की उत्पत्ति से भी पहले बनाई तो उसे छोटा या कम मूल्यवान समझना कितना निरर्थक व मूर्खता होगा।

दूसरे, कलीसिया के लिये बहुतेरी भविष्यद्वाणियां की गईं। यशायाह ने कहा, "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से

अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाई उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चलकर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे, क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।" (यशायाह 2:2, 3)। योएल ने वर्णन किया, "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे; और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा।" (योएल 2:28, 29) तब दानिय्येल ने बतलाया, "और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा।" (दानिय्येल 2:44)। आइये, अब इसका निष्कर्ष निकालें :

1. राज्य की स्थापना अंत के दिनों में होगी।
2. वह पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा।
3. हर जाति के लोग उसमें जाएंगे।
4. प्रभु अपना आत्मा सब प्राणियों पर उंडेलेगा।
5. इसकी स्थापना संसार के चौथे साम्राज्य के दिनों में होगी।
6. यह अन्य सब राज्यों को चूर-चूर करेगा व उनका अंत करेगा और स्वयं सदा स्थिर रहेगा।

अब, यह सब कहां पूरा हुआ? पढ़िये प्रेरितों के काम 2 अध्याय।

तीसरे, कलीसिया के लिये प्रतिज्ञा की गई। यूहन्ना ने कहा कि वह निकट है (मत्ती 3:2)। अर्थात् वह पास है या उसकी स्थापना

शीघ्र ही होने वाली है। यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। "और उसने उनसे कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे। (मरकुस 9:1)। "और उनसे कहा, यों लिखा है; कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" (लूका 24:46-49)।

अब ध्यान से देखें:

1. राज्य निकट था।
2. यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की, कि वह अपनी मृत्यु के बाद इसे बनाएगा।
3. वे जो उस समय यीशु मसीह के साथ थे, उनमें से कुछ ऐसे होंगे जो उस समय तक जीवित रहेंगे जब तक उसे अर्थात् राज्य को आया हुआ न देख लें।
4. वह सामर्थ के साथ आएगा।
5. मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से सब जातियों में किया जाएगा।
6. इसका आरंभ यरूशलेम में होगा।
7. प्रेरितों को स्वर्ग से सामर्थ यरूशलेम में प्राप्त होगी।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर कलीसिया के बनाए जाने के विषय में विवरण का अध्ययन करें, ऐसा करने से आपके लिये यह सब स्पष्ट हो जाएगा।

अब प्रेरितों के काम 2 अध्याय को देखें। इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें। बाइबल के सब विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि कलीसिया की स्थापना इसी समय हुई थी। इसके अतिरिक्त, इसकी स्थापना का स्थान यरूशलेम था, इसकी स्थापना अन्त के दिनों में हुई, व रोमी साम्राज्य के दिनों में हुई, सामर्थ आई, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में किया गया, और तभी से कलीसिया वर्तमान है। तदनुसार, जो कलीसिया परमेश्वर के विचार में थी वह स्थापित हो गई, इसके विषय में जो भविष्यद्वाणियां हुई थीं वे पूर्ण हो गई, और प्रतिज्ञाओं के अनुसार इसकी स्थापना हुई।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. कलीसिया आरंभ में कहां थी? ....

....

2. कलीसिया को परमेश्वर ने कब चुना? ....

....

3. उन तीन भविष्यद्वक्ताओं के नाम बताएं जिन्होंने राज्य के आगमन के विषय में बताया ....

....

4. राज्य कब तक स्थिर रहेगा? ....

....

5. कलीसिया को बनाने की प्रतिज्ञा किसने की? ....

....

6. उसने किस की कलीसिया बनाने को कहा? ....

....

7. उसने कितनी बनाने की प्रतिज्ञा की? ....

....

8. राज्य किस के साथ आने को था? ....

....

9. यरूशलेम में क्या प्रचार किया जाएगा? ....

....

10. कलीसिया की स्थापना के विषय में हम कहां पढ़ सकते हैं?

....

लिखिए सत्य या झूठ :

1. कलीसिया की स्थापना से पूर्व योजना बनाई गई, भविष्यद्वाणियां हुई, और प्रतिज्ञाएं की गई ....
2. कलीसिया का आरंभ परमेश्वर के मन में हुआ ....
3. यूहन्ना ने कहा कि राज्य निकट आ गया है ....
4. राज्य को सामर्थ सहित आना था ....
5. मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में उसी के नाम से किया जाएगा ....
6. कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में हुई ....
7. प्रेरितों 2 अध्याय कलीसिया की स्थापना के विषय में बताता है ....
8. यह सब रोमी साम्राज्य के राजाओं के दिनों में हुआ ....
9. अन्त के दिनों का आरंभ हो चुका है ....
10. भविष्यद्वाणियां तथा प्रतिज्ञाएं पूर्ण हुई ....

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

1. जैसा उसने हमें .... पहले उस में चुन लिया।
2. .... में ऐसा होगा कि ....
3. स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो ....
4. मैं इस पत्थर पर...
5. ....से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार ....।

पाठ-तीन
कलीसिया की स्थापना

पिछले पाठ के अध्ययन में, यशायाह 2:2, 3, योएल 2, 28, 29, और दानिय्येल 2:44 से हमने देखा कि प्रभु के राज्य अर्थात् कलीसिया की स्थापना अन्त के दिनों में, यरूशलेम में, सामर्थ के आने पर होगी, व हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे, और उसका अन्त कभी न होगा। फिर मत्ती 16: 18; मरकुस 9:1 और लूका 24:46-49 में यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा, व उसका आगमन सामर्थ सहित होगा, और मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में, उसी के नाम से किया जाएगा। प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय को पढ़कर ज्ञात होता है कि यह सब भविष्यद्वाणियां और प्रतिज्ञाएं इसी अध्याय में पूर्ण हुईं।

जब हम प्रेरितों के काम 2 अध्याय को पढ़ते हैं, हम पाते हैं कि प्रेरित इस समय यरूशलेम में थे: "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों 2:1-6)। आगे हम पढ़ते हैं उन विभिन्न जाति के लोगों के विषय में जो वहां पर एकत्रित थे, "और

वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? परन्तु औरों ने ठ्टठा करके कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में है। पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगा कर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।" और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों 2: 17,21)।

यह बताने के बाद कि ये सब कुछ जो हो रहा था उन भविश्यद्वाणियों के अनुसार था जो पूर्व की गई थीं, पतरस ने उपदेश देना आरंभ किया। उसने बताया कि यीशु एक मनुष्य था, जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों, और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने उनके बीच उनके द्वारा कर दिखलाए। फिर, उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह कैसे पकड़वाया गया और अधर्मियों के हाथों से क्रूस पर चढ़ाया व मारा गया। आगे पतरस ने बताया कि उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया। उस बड़े जन-समूह को निश्चय दिलाने के लिये पतरस ने दाऊद का उदाहरण देकर बताया कि मसीह पृथ्वी पर रहा, मर गया, गाड़ा गया और पुनजीर्वित हो उठा, और फिर स्वर्ग में चला गया ताकि सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने हाथ बैठे। इसके साथ ही उसने कहा, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह है। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद

पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि भाइयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:32-41, 47)।

पूर्वोक्त विवरण में प्रभु की कलीसिया की स्थापना के विषय में बताया गया है। यहां हम स्पष्टता से देखते हैं कि सब कुछ यरूशलेम में ही घटित हुआ। पवित्र आत्मा की अद्‌भुत शक्ति प्रेरितों पर उंडेली गई। यह पहले से की गई भविष्यद्वाणी के अनुसार था। पतरस ने विशेष रूप से इस पर बल देकर कहा कि, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वकता के द्वारा कही गई है।" (प्रेरितों 2:16), इसलिये इसमें कुछ भी संदेह नहीं। इसके अतिरिक्त, भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि यह

सब अंत के दिनों में होगा, और यहां पतरस ने कहा कि यह वही हो रहा है जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने पूर्व कहा था, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थापना अंत के दिनों में हुई। फिर, उस दिन हर एक जाति के लोग वहां पर उपस्थित थे, व मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार प्रभु यीशु के नाम से किया गया, और लगभग तीन हजार मनुष्यों ने प्रभु का वचन ग्रहण किया, और बपतिस्मा लिया, उन्हें उद्धार मिला, व प्रभु ने उन्हें कलीसिया में मिला दिया। इसलिये, यीशु मसीह ने कलीसिया की स्थापना लगभग 33 ई. स. में की, और तभी से यह आज तक वर्तमान है।

प्रश्न

1. "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" ....
2. "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा।". ....
3. "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ।" ....
4. "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" ....
5. "अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ।" ....

भविष्यद्वाणियां बतलाइए :

1. प्रभु के राज्य की स्थापना कब होनी थी? ....
2. इसकी स्थापना किस नगर में होनी थी? ....
3. कितने लोग उसकी ओर चलेंगे? ....
4. वह किसके साथ आने वाला था? ....
5. राज्य कब तक स्थिर रहेगा? ....

प्रतिज्ञाएं बतलाइए :

1. कलीसिया को कौन बनाएगा? ....

2. उसका आगमन किस के साथ होगा? ....

....

3. क्या प्रचार किया जाएगा? ....

....

4. यह प्रचार कितनी जातियों के मध्य किया जाएगा? ....

....

5. प्रचार किसके नाम से किया जाएगा? ....

....

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्रेरितों 2 अध्याय में से दें :

1. आत्मा किन को मिला? ....
2. उसके लक्षण क्या थे? ....
3. पतरस ने लोगों को यह निश्चय कैसे कराया कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है? ....
4. लोगों ने क्या प्रश्न पूछा? ....

   व क्या उत्तर दिया गया? ....
5. उद्धार पाए हुओं को कलीसिया में किसने मिलाया? ....

   ....

निम्नलिखित की परिभाषा दीजिए :

1. कलीसिया ....
2. भविष्यद्वाणी ....
3. पिन्तेकुस्त ....
4. मन फिराव ....
5. बपतिस्मा ....

पाठ-चार
कलीसिया की पहचान

यदि आपका कोई मित्र बहुत समय से खोया हुआ हो तो उसका पता लगाने के लिये आप क्या करेंगे? स्वभावतः उसे ढूंढ़ने से पहले आप उसकी पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करेंगे व फिर उसे ढूंढ़ना आरंभ करेंगे। मिल जाने पर केवल उसी व्यक्ति को जो पहचान के सभी चिन्हों से समानता रखता होगा, आप स्वीकार करेंगे अर्थात् जिसकी खोज आप कर रहे थे। इसी रीति से, संसार में बहुत सी कलीसियाएं हैं। कोई व्यक्ति यह किस प्रकार से जान सकता है कि कौन सी कलीसिया सही, व सच्ची है? कोई व्यक्ति कैसे जान सकता है कि मसीह की कलीसिया कौन सी है? वस्तुतः आप पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करें और तब विभिन्न कलीसियाओं को उन से मिलाएं। जब आप उस एक कलीसिया का पता लगा लें जो पहचान के प्रत्येक चिन्ह से समानता रखती है, केवल तभी आप विश्वास के साथ कह सकेंगे कि आप को सही व सच्ची कलीसिया मिल गई है। परन्तु पहचान के चिन्ह क्या है? वे कहां मिल सकते हैं? इसका उत्तर हमें बाइबल में से मिलता है।

कलीसिया की पहचान के सभी सही चिन्ह बाइबल में मिलते है। इसलिये, इसके विषय में हम उसमें देख लें कि वे क्या हैं:

1. **मसीह ने कलीसिया को बनाया।** "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)।
2. **इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ।** यह लूका 24:45-49 और प्रेरितों 2 अध्याय से स्पष्ट है।
3. **इसकी स्थापना लगभग 33 ई. स. में हुई,** पिन्तेकुस्त के दिन और इसका ज्ञान भी प्रेरितों 2 अध्याय से होता है।
4. **कलीसिया ने मसीह का नाम धारण किया।** अनेक

मंडलियों का उल्लेख करते हुए, पौलुस ने लिखा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। तथा कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। परन्तु देह क्या है? कलीसिया। (इफिसियों 1:22, 23)।

5. **इसके सदस्य मसीही कहलाए।** "और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों 11:26)। "तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" (प्रेरितों 26:28)। "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। अतः स्मरण रहे, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)।
6. **केवल मसीह ही इसका सिर है।** "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)।
7. **केवल एक ही है।** "एक ही देह है, और एक आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।" (इफिसियों 4:4)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, जबकि एक ही देह है, और देह कलीसिया है, तब केवल एक ही कलीसिया है।
8. **कलीसिया में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम है।** अर्थात् विश्वास (इब्रानियों 11:6), मन फिराना (प्रेरितों 17:30), विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10, 9, 10), और बपतिस्मा। (मरकुस 16:16)। जिस व्यक्ति का उद्धार होता है उसे प्रभु यीशु कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)।

इसी प्रकार से रोमियों 6:3, 4 व गलातियों 3:26, 27 और 1 कुरिन्थियों 12:13 से भी यही शिक्षा मिलती है कि विश्वासी जन मसीह और उसकी कलीसिया में एक होने के लिये बपतिस्मा लेते है। इन आज्ञाओं को मानने के द्वारा मनुष्य का जन्म कलीसिया अर्थात् राज्य में होता है। (यूहन्ना 3:3-5)।

9. **कलीसिया की उपासना विशेष है।** सब मसीही सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होते हैं (प्रेरितों 20:7), गाने के लिये (इफिसियों 5:19), प्रार्थना करने के लिये (प्रेरितों 2:42), परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये (2 तीमुथियुस 2:15), प्रभु भोज में भाग लेने के लिये (1 कुरिन्थियों 11), और चंदा देने के लिये (1 कुरिन्थियों 16:2)।

10. **कलीसिया की शिक्षा केवल बाइबल पर ही आधारित है।** किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह बाइबल में कुछ भी बढ़ाए, या उसमें से कुछ भी निकाले या उसे बदले। (प्रकाशितवाक्य 22: 18, 19; गलतियों 1: 6-11)। केवल बाइबल ही कलीसिया का एकमात्र धर्मसार है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पुस्तकें व धर्मसार अस्वीकृत है।

11. **कलीसिया का संगठन निश्चय ही परमेश्वर की कही गई योजना के अनुसार होना चाहिए।** मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23) और प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष व सेवक होने चाहिए। (1 तीमुथियुस और 3 तीतुस 1)। पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का न तो कोई प्रधान है न कोई प्रधान कार्यालय और न ही इसका कोई राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संगठन है।

12. **कलीसिया का उद्देश्य तीन प्रकार के कार्य करना है।** अर्थात् सुसमाचार प्रचार करना (मरकुस 16:15, 16), दीनों की सहायता करना (गलातियों 6; याकूब 2), और सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिये कार्य करना (इब्रानियों 3:12-14)।

13. **प्रत्येक मसीही को चाहिए कि वह भक्तिपूर्ण मसीही जीवन निर्वाह करे।** वह संसार से प्रेम नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 2:15; याकूब 4:4), इसके विपरीत उसमें आत्मिक फल होने चाहिए (गलातियों 5:22, 23)। जीवन का मुकुट केवल वही प्राप्त करेगा जो प्राण देने तक विश्वासी रहेगा (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

कलीसिया की पहचान के यह कुछ चिन्ह हैं। इन के विषय में हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्श अर्थात् बाइबल से ज्ञात होता है। अब, जिस कलीसिया के सदस्य आप है उसकी तुलना इनसे कीजिए। उदाहरणार्थ, आरंभ के चार चिन्हों को ले लें। अपने आप से पूछें, जिस कलीसिया में मैं हूं "उसे किस ने बनाया?" क्या उसे मसीह ने स्थापित किया या किसी मनुष्य ने? तब पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कहां पर हुई थी?" क्या इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था या किसी अन्य स्थान पर? फिर पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?" यदि इसकी स्थापना 33 ई. स. के बाद में हुई है तब यह प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। और अंत में, स्वयं से पूछें, "इस कलीसिया का नाम क्या है?" यदि यह मसीह का नाम भी अपने ऊपर नहीं रखती, तब यह मसीह की कैसे हो सकती है? इसी प्रकार के अन्य प्रश्न भी आप पूछ सकते हैं, परन्तु यह निर्णय करने के लिये कि जिस कलीसिया में आप है वह प्रभु की है या किसी मनुष्य की यही पर्याप्त है। इसी प्रकार से अन्य कलीसियाओं की तुलना भी आप इन पहचान के चिन्हों से कर सकते हैं, यह निश्चय करने के लिये कि वे परमेश्वर की है या मनुष्यों की। मेरा विश्वास है कि आप अंतर देख सकेंगे यदि आप अपने आप से ईमानदार है।

यदि आप जान लेते हैं कि जिस कलीसिया के आप सदस्य है वह बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया नहीं है; तब आप से मेरा यह आग्रह है कि आप उसे त्याग दें, सत्य को सीखें, उसे मानें, ताकि प्रभु आपको उस कलीसिया में मिलाए जिसके विषय में आप परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। तब आप उस एक कलीसिया के सदस्य होंगे जिसमें सब उद्धार पाए हुए मिलाए जाते हैं।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. बहुत समय से खोए हुए अपने किसी मित्र का पता लगाने के लिये आप क्या करेंगे? ....
....
2. क्या संसार में अनेक कलीसियाएं हैं? ....
....
3. सही कलीसिया के विषय में कैसे पता चल सकता है? ......
....
4. पहचान के चिन्ह कहां पर मिल सकते हैं? ....
....
5. कलीसिया को किसने बनाया? ....
....
6. इसका आरंभ कहां पर हुआ? ....
....
7. इसकी स्थापना कब हुई थी? ....
....
8. इसका नाम बताएं? ....
....
9. देह से क्या अभिप्राय है? ....
....
10. सदस्य क्या कहलाए थे? ....
....
11. कलीसिया का सिर कौन है? ....
....
12. कलीसियाएं कितनी हैं? ....
....
13. कलीसिया में प्रवेश पाने के नियम क्या हैं? ....
....

14. मसीह और कलीसिया में कोई व्यक्ति कैसे सम्मिलित हो सकता है? ....

....

15. उपासना करने के नियम क्या है? ....

....

16. कलीसिया की शिक्षा क्या है? ....

....

17. बताएं कि प्रत्येक मंडली में कौन होने चाहिए? ....

....

18. कलीसिया का उद्देश्य कौन से तीन प्रकार के कार्य करने का है?

....

19. मसीही जीवन किस प्रकार का होना चाहिए? ....

....

20. जीवन का मुकुट कौन प्राप्त करेगा? ....

....

21. क्या मनुष्य द्वारा बनाई हुई कलीसिया प्रभु की कलीसिया हो सकती है? ....

....

22. जिस कलीसिया का आरंभ यरूशलेम में नहीं हुआ क्या वह प्रभु की हो सकती है? ....

....

23. जिस कलीसिया का आरंभ 33 ई. स. के बाद हुआ क्या वह प्रभु की हो सकती है? ....

....

24. क्या वह कलीसिया प्रभु की हो सकती है जिसके सदस्य मसीह का नाम भी अपने ऊपर नहीं रखते? ....

....

25. यदि आपका उद्धार हुआ है, मसीह आपको किस कलीसिया में मिलाएगा? ....

....

पाठ-पांच
कलीसिया का नाम

कलीसिया को बाइबल अनुसार होने के लिए अवश्य है कि उसका नाम बाइबल से हो। तथापि, संसार में मनुष्यों द्वारा बनाई हुई बहुतेरी कलीसियाएं है जो विभिन्न नामों से कहलाई जाती है। ऐसा क्यों है? इनमें से कुछ नाम इन कलीसियाओं के संस्थापकों को सम्मानित करने के लिये रखे गए, जैसे "लूथरन।" और कुछ नाम किसी शिक्षा या सिद्धांत जैसे बपतिस्मा अथवा प्रभु का कार्य करने की किसी विधि को ऊंचा करने के लिये रखे गए। कुछ ऐसे हैं जो किसी दिन को महिमान्वित करते हैं, जैसे पिन्तेकुस्त अथवा सब्त का दिन। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी हैं जो कलीसिया में अध्यक्षों (प्रेजबिटरों) के कार्य को महत्व देते है। किन्तु ये सब नाम, और ऐसे ही अन्य भी जिनका उल्लेख किया जा सकता है, उस महिमा, और, प्रशंसा और सम्मान को जो मसीह का है ले लेते हैं।

मनुष्यों द्वारा दिए गए नाम अनुचित है, इसके बहुत से कारण है। पहले, ये फूट डालते है। इनसे वहां भेद-भाव उत्पन्न होते हैं जो कि परमेश्वर नहीं चाहता। ये लोगों को अलग-अलग करते हैं। ये प्रभु यीशु की उस प्रार्थना का विरोध करते है जिसके विषय में यूहन्ना 17 वें अध्याय में हम पढ़ते हैं, उसने प्रार्थना की कि हम सब एक हों। दूसरे, पवित्रशास्त्र में इनकी निंदा की गई है। 1 कुरिन्थियों 1:10-13 में प्रेरित पौलुस ने मनुष्यों के नामों को धारण करने के अनुचित परिणाम के विषय में मसीही भाईयों को बताया, यह पक्षपात और साम्प्रदायिकता को जन्म देते हे। तीसरे, मनुष्यों के नाम प्रभु के नाम का स्थानापन्न करते है। तौभी मसीह के नाम के विषय में हम पढ़ते हैं, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई

दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12), चौथे, मनुष्यों के नाम भ्रम-पूर्ण व अधर्म-पूर्ण है, अविश्वासियों पर इनका अनुचित प्रभाव पड़ता है। यह अविश्वास को जन्म देते है। पांचवें, वे सब जो इन नामों को अपने ऊपर रखते हैं, और वे जो इन के लिये मसीह से फिर गए हैं, वे सब इन्हीं के कारण नाश होंगे। इसलिये, ये अनुचित और पापपूर्ण है।

कलीसिया के विषय में हम पढ़ते हैं, यीशु मसीह ने इसे बनाने की प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 16:18)। पवित्रशास्त्र में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया था (प्रेरितों 20:28), और वह इसका उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23), व इसका सिर है (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, यह स्वभाविक ही है कि अपने संस्थापक, बनाने वाले, और उद्धारकर्ता को सम्मानित करने के लिये उसका नाम यह अपने ऊपर रखे। ऐसे ही, जब पौलुस ने रोम में कलीसिया को लिखा, व जिस स्थान में वह था वहां की स्थानीय मंडलियों की ओर से अभिवादन भेजा, उसने कहा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। फिर कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। किन्तु, जबकि देह कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23), इसलिये यह स्पष्ट है कि वह मसीह की कलीसिया के विषय में कह रहा था। इसे परमेश्वर की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 1:2; प्रेरितों 20:28), परमेश्वर का राज्य (1 कुरिन्थियों 6:9), मसीह का राज्य (इफिसियों 5:5), उसके प्रिय पुत्र का राज्य (कुलुस्सियों 1:13), हमारे प्रभु का राज्य (2 पतरस 1:11), कलीसिया (प्रेरितों 13:1), जीवते परमेश्वर की कलीसिया (1 तीमुथियुस 3:15) पहिलौठे की कलीसिया (इब्रानियों 12:23) भी कहा गया है।

तदनुसार, कलीसिया का वर्णन किसी और अन्य नाम या वाक्यांश से नहीं हुआ। इसी समय, यह भी ध्यान में रहे कि जो कुछ परमेश्वर का है वह मसीह का भी है। इसी प्रकार से, ये सब नाम उस कलीसिया की ओर संकेत करते हैं जिसे यीशु मसीह ने बनाया। यदि यह मसीह की कलीसिया नहीं, तब किस की हो सकती है? इसके अतिरिक्त, अन्य नाम व विभिन्न वाक्यांशों को धारण करके, ऐसा लगता है कि लोग जानबूझ कर परमेश्वर के वचन से दूर भागना चाहते है ताकि प्रभु की कलीसिया के लिये अपने मन पसंद का कोई अन्य नाम चुनें। परन्तु आईये, हम बाइबल की बात मानें और कलीसिया को उसी नाम से संबोधित करें जो बाइबल में मिलता है। तभी हम सही होंगे।

जहां तक कलीसिया के सदस्यों के नाम का प्रश्न है, पवित्रशास्त्र में इसे भी स्पष्टता से बताया गया है। सबसे पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा कि परमेश्वर अपने लोगों को एक नया नाम देगा। (यशायाह 62:2)। कई वर्षों के बाद परमेश्वर ने पौलुस को चुना कि वह उस नाम को लोगों के सामने प्रगट करे (प्रेरितों 9:15)। परन्तु यह तब तक नहीं दिया जाना था जब तक कि अन्य-जाति वालों को परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का अवसर न मिले। और यह सब सूरिया के अन्ताकिया में पूरा हुआ जबकि चेले सबसे पहले वहां मसीही कहलाए। (प्रेरितों 11:26)। इसके बाद, हम पढ़ते हैं जबकि पौलुस राजा अग्रिप्पा को परमेश्वर का वचन सुना रहा था, तो उसने सुन कर उत्तर दिया, "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।" (प्रेरितों 26:28)। अत: हम पढ़ते हैं, पतरस ने कहा, "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। इसलिये, यह स्पष्ट हो जाता है कि आरंभ के दिनों के मसीह के अनुयायी मसीही, केवल मसीही थे। आज भी प्रभु चाहता है कि हम वही हो। यदि हम

मसीही नाम के साथ किसी अन्य नाम या वाक्यांश को जोड़ते हैं, तब इसका अर्थ यह होता है कि हम वास्तव में मसीही नहीं है। मसीही एक ऐसा नाम है जो लोगों को शेष विश्व से अलग करता है व यह प्रभु की इच्छानुसार है।

कलीसिया व इसके सदस्य दोनों के नामों के द्वारा, यीशु मसीह के नाम की प्रशंसा व बढ़ाई होनी चाहिए। ऐसा क्यों? इसलिये, क्योंकि, यह पारिवारिक नाम है (इफिसियों 3:15), यह नाम सब नामों में श्रेष्ठ है (फिलिप्पियों 2:9-11), और इसी एक नाम में उद्धार है (प्रेरितों 4:12)। इसलिये, हमें मसीह के नाम में विश्वास करना है (1 यूहन्ना 5:13), उसके नाम को स्वीकार करना है (2 तीमुथियुस 2:19), मन फिराकर उसके नाम में बपतिस्मा लेना है (प्रेरितों 2:38), उसके नाम में आराधना करने के लिये एकत्रित होना (मत्ती 18 :20), व सब कुछ उसी के नाम में करना है (कुलुस्सियों 3:17) ताकि उसके नाम के द्वारा हमें अन्नत जीवन मिल सके (यूहन्ना 20: 30, 31)।

यह सब कुछ ध्यान में रखते हुए, निःसंदेह, कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि नाम का कुछ भी महत्व नहीं है या नाम में कुछ भी नहीं है। हां, यह सत्य है कि मनुष्यों के नामों व वाक्यांशों में उद्धार नहीं है, परन्तु वे जो इनको अपने ऊपर लेते व रखते हैं इन्हीं के कारण नाश होंगे। दूसरी ओर, उद्धार केवल मसीह के नाम में ही है।

प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

1. "कलीसिया को बाइबल अनुसार होने के लिये अवश्य है कि उसका ....बाइबल से हो।
2. "मनुष्यों द्वारा दिये गए नाम ....
3. "प्रभु यीशु ने प्रार्थना की थी कि हम ....
4. "इसी प्रकार तुम सब मिलकर..
5. "परमेश्वर अपने लोगों को ....

लिखिए हां या नहीं :

1. कलीसिया को बाइबल अनुसार होने के लिये, क्या उसका नाम भी बाइबल से होना चाहिए? ....
2. क्या मनुष्यों द्वारा दिए गए नाम अनुचित हैं? ....
3. क्या मसीह के नाम में उद्धार है? ....
4. क्या प्रभु चाहता है कि हम सब एक ही नाम को अपने ऊपर रखें? ....
5. क्या कोई व्यक्ति प्रभु की महिमा कर सकता है यदि वह उसका नाम अपने ऊपर न रखे? ....

सही उत्तर लिखिए :

1. मनुष्यों के बनाए हुए विभिन्न नामों का आरंभ कैसे हुआ?
   ....
   ....
2. ऐसे कुछ कारण बताइए कि मनुष्यों के दिए हुए नाम व वाक्यांश क्यों अनुचित है? ....
   ....

3. प्रभु यीशु ने किस बात के लिये प्रार्थना की थी? ....
....
4. जब पौलुस को मालूम हुआ कि उसके भाई विभिन्न समुदाय बना रहे हैं तब उसने क्या किया? ....
....
5. कलीसिया के ऊपर मसीह का नाम होना क्यों आवश्यक है?
....
6. रोमियों 16:16 का वर्णन करें ....
....
7. 1 कुरिन्थियों 12:27 में मसीह की देह का अर्थ क्या है? ....
....
8. कलीसिया के कुछ अन्य नामों का वर्णन करें? ....
....
9. यदि कलीसिया मसीह की कलीसिया नहीं तब यह किस की कलीसिया हो सकती है? ....
....
10. कलीसिया के सदस्य क्या कहलाए? ....
....
11. नए नियम में किन तीन स्थानों पर मसीही नाम का वर्णन हुआ है? ....
....
12. प्रभु की इच्छानुसार हमें आज क्या होना चाहिए? ....
....
13. क्या भिन्न-भिन्न प्रकार के मसीही होना संभव है? ....
....
14. हमें मसीह के नाम को क्यों ऊंचा करना है? ....
....
15. हमें मसीह के नाम में क्या करना है?
....

पाठ–छः
कलीसिया का संगठन

यीशु मसीह ने कलीसिया को बनाया (मत्ती 16:18)। कलीसिया समस्त संसार में से बुलाए हुए लोगों से मिलकर बनी हुई है (कुलुस्सियों 1:13, 14)। यह उद्धार पाए हुओं लोगों की मंडली है (प्रेरितों 2:47)। यह मसीह की आत्मिक देह है (कुलुस्सियों 1:18), व केवल एक ही है। (इफिसियों 4:4)।

यद्यपि कलीसिया स्वभाव में सार्वदेशिक है, यह सैकड़ों व हज़ारों स्थानीय मंडलियों से मिलकर बनी हुई है, और प्रत्येक मंडली अनेक सदस्यों से मिलकर बनी हुई है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कलीसिया का नियंत्रण राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है परन्तु स्थानीय है। दूसरे शब्दों में, प्रभु की कलीसिया का पृथ्वी पर न तो कोई प्रधान है और न ही कोई प्रधान–कार्यालय है।

पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि मसीह कलीसिया का सिर (प्रधान) है। इन पदों पर ध्यान दें: "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया : और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।" (इफिसियों 1:22, 23)। "क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।" (इफिसियों 5:23)। "और वही देह अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)। अब यह पद क्या शिक्षा देते है? जैसे कि पहले कहा जा चुका है, कि मसीह देह का सिर है, व देह कलीसिया है। सिर कितने है? केवल एक, और वह मसीह

है, इस पदवी में उसने किसी को भी साझी नहीं बनाया।

जैसे कि कलीसिया अनेक स्थानीय मंडलियों से मिलकर बनी हुई है, और जबकि मसीह कलीसिया का सिर है, तब इसका अर्थ यह हुआ कि वह प्रत्येक स्थानीय मंडली अर्थात् स्थानीय कलीसिया का सिर है, और इसी प्रकार से कलीसिया के प्रत्येक सदस्य का भी। इसी बात को ध्यान में रख कर, पौलुस ने कहा, "सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।" (1 कुरिन्थियों 11:3)।

फिर, हर एक स्थानीय मंडली का अपना निजि संगठन होना चाहिए। इसका सिर (प्रधान) मसीह है, सदस्यों में से अध्यक्ष तथा सेवक नियुक्त करने चाहिए जो कलीसिया की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं की देखभाल करें। अध्यक्षों का कार्य सदस्यों की आत्मिक चौकसी करना है (प्रेरितों 20:28), जबकि सेवकों का कार्य भौतिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना है (प्रेरितों 6)। यह भी ध्यान में रहे कि पवित्रशास्त्र हमें बतलाता है कि मंडली का नियंत्रण एक अध्यक्ष अथवा एक सेवक के पास नहीं होना चाहिए, इसके विपरीत प्रत्येक मंडली में एक से अधिक अध्यक्षों और एक से अधिक सेवकों को होना चाहिए। ऐसे ही एक मंडली के अध्यक्ष और सेवक दूसरी मंडली या मंडलियों पर अधिकार नहीं रखते। मंडलियां आपस में सहभागिता रखती है परन्तु एक दूसरे के ऊपर अधिकार नहीं रखती।

अध्यक्ष, पास्टर, बिशप, और प्रेज़बिटर शब्द एक ही प्रकार का कार्य करने वाले व्यक्ति को संबोधित करते हैं। इसलिये एक अध्यक्ष एक पास्टर, एक बिशप इत्यादि भी है। 1 तीमुथियुस 3:1-7 में प्रेरित पौलुस ने बहुतेरी योग्यताओं का वर्णन किया, "यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील,

सभ्य, पहुनाई करने वाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू और न लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और लड़के वालों को सारी गंभीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबंधन करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्या करेगा)। फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दंड पाए। और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए।" इन्हीं योग्यताओं के विषय में तीतुस 1:5-9 में भी हम पढ़ते हैं। इसलिये कलीसिया में हर एक व्यक्ति अध्यक्ष नहीं हो सकता। केवल योग्य व्यक्ति ही नियुक्त किए जाने चाहिए, और तौ भी, प्रत्येक मंडली में एक से अधिक अध्यक्षों तथा सेवकों को होना चाहिए। उन मंडिलयों में जहां कि ऐसे व्यक्ति न हों जो अध्यक्ष बन सकें, कलीसिया में पुरुषों को सब कार्य की देखभाल उस समय तक करनी चाहिए जब तक कि वहां पर ऐसे योग्य पुरुष न हो जो कि अध्यक्ष नियुक्त किये जा सके।

अध्यक्षों के साथ सहायक कार्य करने के लिये सेवकों को भी नियुक्त करना चाहिए। सेवकों को चाहिए कि वे स्थानीय अध्यक्षों के निर्देशन में कार्य करें। इनकी योग्यताओं का वर्णन भी पौलुस ने यू किया : "वैसे ही सेवकों को भी गंभीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हो। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें। इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए, दोष लगाने वाली न हो, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हो। सेवक एक ही पत्नी के पति हो और लड़के वालों और अपने घरों का अच्छा प्रबंध करना जानते हो। क्योंकि जो सेवक

का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

यह कलीसिया का ईश्वरीय संगठन है। यीशु मसीह सिर (प्रधान) है, व प्रत्येक मंडली में, मंडली के अपने अध्यक्ष और सेवक हो। इनके अधिकार में प्रचारक, शिक्षक तथा सदस्य हो। प्रभु द्वारा दिए गए संगठन के अनुसार, यदि एक मंडली सत्य से फिर जाए, तो दूसरी मंडलियां विश्वासी बनी रह सकती हैं। अथवा एक से अतिरिक्त सारी मंडलियां सत्य से फिर जाएं, तब यह संभव है कि वह एक विश्वासी बनी रहे। प्रभु की योजना अनुसार प्रत्येक मंडली का संगठन स्वाधीन है, अर्थात् दूसरी मंडलियों से स्वतंत्र है। उनका आपसी संगठन मनुष्यों द्वारा बनाए हुए नियमों के अनुसार नहीं है, परन्तु प्रेम के द्वारा है। इसलिये वे एक-दूसरे के साथ सहभागिता रखती है, और साथ मिलकर कार्य करती है, क्योंकि वे सब मसीह में एक है। परमेश्वर की इच्छा में बदलाव नहीं लाया जा सकता।

पवित्रशास्त्र में हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि पतरस अथवा कोई अन्य व्यक्ति कलीसिया का सिर (प्रधान) रहा हो। हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि एक अध्यक्ष (बिशप, पास्टर) या प्रचारक एक से अधिक मंडलियों पर अधिकार रखता हो। इसी प्रकार से क्लेरजी (पादरी लोग) और लेइटी के विषय में भी हम कहीं नहीं पड़ते। कलीसिया के परमेश्वरीय संगठन से अधिकांश लोग फिर गए है, और इतनी अधिक फूट व विभाजन का यह एक मूल कारण है। इसलिये, आइये हम बाइबल के पास वापस जाने का निश्चय करें, और क्लीसिया के संगठन के उस सच्चे आदर्श अर्थात् नमूने को स्वीकार करें जो हमें पवित्रशास्त्र में मिलता हैं।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. कलीसिया को किस ने बनाया? ....
....
2. कलीसिया काहे की बनी हुई है? ....
....
3. मसीह की देह शारीरिक है या आत्मिक? ....
....
4. कलीसियाएं कितनी है? ....
....
5. कलीसिया स्वभाव में .... है।
6. कलीसिया सैकड़ों व हज़ारों स्थानीय .... से ....
....
7. क्या कलीसिया का नियंत्रण स्थानीय, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय है? ....
....
8. क्या पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का कोई प्रधान या प्रधान कार्यालय है? ....
....
9. कलीसिया का सिर कौन है? ....
....
10. स्थानीय कलीसिया के अगुए क्या कहलाते हैं? ....
....
11. अध्यक्षों तथा सेवकों का कार्य क्या है? ....
....
12. प्रत्येक मंडली में कितने अध्यक्ष और कितने सेवक होने चाहिए?
....
13. अध्यक्षों को किन अन्य नामों से पुकारा जा सकता है? ....
....

14. अध्यक्षों की योग्यताओं के विषय में कहां लिखा है?

....

15. सेवकों की योग्यताओं के विषय में कहां लिखा है?

....

16. यदि किसी मंडली में योग्य सदस्य न हो तो क्या वहां अध्यक्ष और सेवक नियुक्त किये जा सकते हैं? ....

....

17. ऐसी अवस्था में, कलीसिया की अगुवाई कौन करेगा? ....

....

18. मंडलियों का आपसी संगठन किस प्रकार है? ....

....

19. क्या परमेश्वर द्वारा दिये गए संगठन के आदर्श में बदलाव लाया जा सकता है? ....

....

20. क्या पतरस कलीसिया का सिर था, पवित्रशास्त्र के अनुसार?

....

21. क्या बाइबल में हम कहीं पढ़ते हैं कि कलीसिया में एक व्यक्ति बिशप कहलाए तथा बहुतेरी मंडलियों पर अधिकार रखे?

....

22. क्या हम पढ़ते हैं कि एक पास्टर एक कलीसिया की अगुवाई करे? ....

....

23. क्या हम बाइबल में क्लेरजी अथवा लेइटी के विषय में पढ़ते हैं?

....

....

24. धार्मिक संसार में इतनी अधिक फूट का क्या कारण है?

....

....

25. कलीसिया के संगठन का आदर्श हमें कहां मिलता है?

....

....

पाठ–सात
कलीसिया के सदस्य कैसे बनें?

अब तक के अध्ययन में हम ने कलीसिया के महत्व को देखा। इस तथ्य का समर्थन करते हुए पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि मसीह कलीसिया के लिए मरा (इफिसियों 5:25), उसने कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया है (प्रेरितों 20:28), और वह इसका उद्धारकर्ता है (इफिसियों 5:23)। अब प्रश्न यह है, क्या मसीह किसी ऐसी वस्तु के लिये मरा जिसका कोई महत्व न हो? क्या उसने अपना लोहू एक ऐसी कलीसिया के लिये बहाया जो कि मूल्य–रहित व व्यर्थ है? यदि कोई व्यक्ति इसके बाहर भी उद्धार पा सकता है तब वह इसका उद्धारकर्ता क्यों है? नि:संदेह, हर एक प्रश्न का उत्तर आप नहीं में देंगे, और यह उचित भी है। तब, ऐसा क्यों कहा जाता है कि कलीसिया का कोई विशेष महत्व नहीं है, और इसके सदस्य हुए बिना भी उद्धार मिल सकता है। इसका कारण यह है कि अधिकांश लोग कलीसिया के विषय में सत्य को नहीं जानते क्योंकि उन्होंने सही शिक्षा नहीं पाई है।

हां, बाइबल यह शिक्षा नहीं देती कि कलीसिया उद्धारकर्ता है, परन्तु वह यह शिक्षा देती है कि उद्धार पाने के लिये कलीसिया में होना आवश्यक है। जिस प्रकार से नूह का जहाज बचाने वाला नहीं था, तौ भी नूह और उसके परिवार को जलप्रलय से बचने के लिये उस जहाज के भीतर होना अतिआवश्यक था, ऐसा ही कलीसिया के साथ भी है। इतना ही नहीं, परन्तु जब कोई उद्धार पाता है तो प्रभु

उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता है। पिन्तेकुस्त के दिन तथा उसके बाद के दिनों में जब लोगों ने सुसमाचार सुना और उसे माना, तब उनका उद्धार हुआ, जैसा कि लिखा है, "और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें (कलीसिया में) मिला देता था" (प्रेरितों 2:47)। सो यदि कोई उद्धार प्राप्त करता है तो वह प्रभु की कलीसिया का सदस्य बन जाता है। यदि वह सदस्य नहीं है, तब उसका उद्धार नहीं हुआ है। यह समझना कितना सरल है। दूसरे शब्दों में ऐसा कोई भी उपाय नहीं है जिसके द्वारा कलीसिया के बाहर उद्धार मिल सके। मनुष्यों के पंथ अथवा सम्प्रदायों के सदस्य बने बिना हमें उद्धार मिल सकता है, परन्तु मसीह की कलीसिया के सदस्य बने बिना कोई भी व्यक्ति उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता।

अपने अध्ययन को जारी रखते हुए, प्रभु की कलीसिया में अपने आप से कोई भी व्यक्ति सम्मिलित नहीं हो सकता। इसके विपरीत, उद्धार पाए हुओं को प्रभु कलीसिया में मिलाता है। जबकि वह केवल उद्धार पाए हुओं को ही कलीसिया में मिलाता है इसलिये कलीसिया उद्धार पाए हुए जनों से मिलकर बनी हुई है। मनुष्य के मन, उद्देश्य इत्यादि को प्रभु खूब जानता है, और वह देखता है कि कौन यथार्थ में उसकी आज्ञाओं को मान रहा है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में उसकी आज्ञा मानता है तब परमेश्वर उसे कलीसिया में मिलाता है। यदि ऐसा नहीं है, तब वह परमेश्वर द्वारा नहीं मिलाया जाता, यद्यपि सदस्य उसे स्वीकार कर लें क्योंकि बाहरी रूप से उसने आज्ञाओं का पालन किया है, और जबकि हम मनों को नहीं जांच सकते। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को कलीसिया में मिला सकता है, तब

कदाचित सबको स्वीकार किया जा सकता है, बिना किसी के उद्देश्यों की ओर ध्यान दिए। इसी कारण, कलीसिया में मिलाने का कार्य करने के लिये केवल प्रभु ही विश्वासनीय है। वह जानता है कि किसे उद्धार पाए हुओं के झुंड में होना चाहिए, और कौन केवल दिखावे के लिये उसकी आज्ञाओं को मानता है। उससे कोई भी भूल नहीं हो सकती।

जबकि मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है, और वह केवल उद्धार पाए हुए लोगों को ही इसमें मिलाता है, तब स्वभावतः आप यह जानना चाहेंगे कि प्रभु क्या चाहता है कि मनुष्य क्या करे ताकि वह इसमें प्रवेश पा सके। परमेश्वर के वचन में यह स्पष्टता से बताया गया है। विशेष रूप से प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित विभिन्न नए जन्म के उदाहरणों द्वारा इसे और भी स्पष्ट किया गया है। परन्तु निम्नलिखित विशिष्ट पगों अथवा उपायों की ओर ध्यान दें। प्रभु की कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये किसी व्यक्ति को क्या करना है:

1. **मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य को सुनें।** "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)
2. **उसे चाहिए कि वह परमेश्वर और यीशु मसीह में विश्वास करे।** "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)। प्रभु यीशु ने

कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना 14:1)।

3. **उसे चाहिए कि वह अपने पापों से मन फिराए।** "मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगें तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।" (लूका 13:3)।
4. **उसे चाहिए कि वह यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करे।** मसीह ने स्वयं कहा, "जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा।" (मत्ती 10:32)।
5. **और उसे चाहिए कि वह अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले।** बपतिस्मा पानी में गाढ़ा जाना है (रोमियों 6:3, 4; प्रेरितों 8:36-39)। "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)।

अब इस पाठ से हमने क्या सीखा? हमने देखा कि जो उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाता है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति प्रभु की आज्ञाओं को मानता व उद्धार पाता है तो वह प्रभु की इच्छा से कलीसिया का सदस्य बन जाता है। हमने यह भी

देखा कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये सत्य को सुनना, उस पर विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, मसीह को स्वीकार करना, और बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिये आवश्यक है। इस रीति से, जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है तब वह कलीसिया में सम्मिलित हो जाता है। परमेश्वर की योजनानुसार मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है, और तब उद्धार पाए हुओं को प्रभु अपनी कलीसिया में मिलाता है। क्या यह समझना सरल नहीं है?

दूसरे शब्दों में ऐसे इसे कहा जा सकता है, प्रभु यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने का केवल एक ही मार्ग है अर्थात् मनुष्य को जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। (यूहन्ना 3:3-5)। किन्तु राज्य क्या है? यह कलीसिया है। (मत्ती 16:18, 19)। सो क्या प्रभु ने मनुष्य को दो मार्ग दिए कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये? कतई नहीं। इसलिये, जब कोई व्यक्ति विश्वास करता और बपतिस्मा लेता है (वचन के द्वारा आत्मा से उत्पन्न होकर उसकी शिक्षा को मानता है) तब वह परमेश्वर के राज्य अर्थात् परमेश्वर के परिवार में, जो उसकी कलीसिया है, जन्म लेता है।

फिर, पौलुस ने कहा कि हम सब ने एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया है (1 कुरिन्थियों 12:13)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। देह कितनी है? केवल एक। (इफिसियों 4:4; इफिसियों 1:22, 23)। इसमें प्रवेश कैसे करते हैं? बपतिस्मा लेकर। परन्तु यीशु मसीह ने कहा कि उद्धार पाने के लिये विश्वास करना और बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस 16:16)।

बिल्कुल ठीक, कुरिन्थियों ने भी ऐसा ही किया था। (प्रेरितों 18:8)। इसलिये जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तब वह उसका यानि कलीसिया का अंग बन जाता है अर्थात् उसमें मिला दिया जाता है।

उद्धार पाने के लिये केवल एक ही मार्ग है, जैसा कि अभी हमने देखा, और जो उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु कलीसिया में मिलाता है। क्या आप उस कलीसिया के सदस्य है जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ते हैं? यदि नहीं, तब आपका उद्धार नहीं हुआ है। आपको चाहिए कि आप अध्ययन करें, मालूम करें, और प्रभु की आज्ञा मानें, तब वह स्वयं आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. इस अध्ययन में हमने कलीसिया के विषय में क्या सीखा?

   ....

2. कलीसिया के लिये अपनी जान किसने दी?

   ....

3. कलीसिया को किस मूल्य से मोल लिया गया था?

   ....

4. कलीसिया का उद्धारकर्ता कौन है?

   ....

5. हम कैसे जानते हैं कि कलीसिया महत्वपूर्ण है?

   ....

6. कुछ लोग ऐसा क्यों कहते हैं कि कलीसिया महत्व-रहित है?

   ....

7. क्या कलीसिया उद्धार करती है?

   ....

8. क्या उद्धार पाने के लिये कलीसिया का सदस्य होना आवश्यक है?

   ....

9. नूह तथा उसके परिवार को जल प्रलय से बचने के लिये कहां पर होना आवश्यक था?

   ....

10. क्या वे जहाज़ के बाहर बच सकते थें?

    ....

11. उद्धार पाए हुए लोगों को कलीसिया में कौन मिलाता है?

    ....

12. पवित्रशास्त्र में यह शिक्षा कहां मिलती है?

    ....

13. जब कोई व्यक्ति उद्धार पाता है तो वह किस कलीसिया का सदस्य बन जाता है?

....

14. क्या कोई स्वयं को प्रभु की कलीसिया में मिला सकता है?

....

15. कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये किन पांच आज्ञाओं को मानना आवश्यक है? ....

....

....

16. क्या इन आज्ञाओं को माने बिना उद्धार मिल सकता है?

....

17. बपतिस्मा क्या है?

....

18. बपतिस्मा क्यों लिया जाता है?

....

19. राज्य क्या है?

....

20. वह कौन सा एक मार्ग है जिसके द्वारा राज्य में प्रवेश किया जा सकता है?

....

21. देह क्या है?

....

22. कितनी देह हैं?

....

23. इसमें प्रवेश कैसे किया जा सकता है?

....

24. उद्धार प्राप्त करने के कितने मार्ग हैं?

....

25. कलीसिया में सम्मिलित होने के मार्ग कितने हैं?

....

पाठ–आठ
कलीसिया की उपासना

कलीसिया उद्धार पाए हुए जनों से मिलकर बनी हुई है। इसका उद्देश्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की उपासना व सेवा करना है। पौलुस ने कहा, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:17)।

नऐ नियम में तीन प्रकार की उपासना का वर्णन मिलता है। पहिले, हम अनजानी उपासना के विषय में पढ़ते हैं जब पौलुस अथेने में अरियुपगुस के बीच में था, उसने स्वयं को चारों ओर से मूरतों से घिरा हुआ पाया, और उसने कहा, "क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिए।" सो जिसे तुम बिना जान पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।" (प्रेरितों 17:23)। जिस प्रकार से वहां उस समय लोग अनजानी उपासना किया करते थे, आज भी बहुतेरे लोग ठीक उसी प्रकार से करते है। केवल इतना ही नहीं कि लाखों व्यक्ति मूर्तियों व प्रतिमाओं के सामने झुकते है, परन्तु इससे भी अधिक संख्या में लोग धर्म के नाम में इस प्रकार के विभिन्न कार्य कर रहे है जिनका वर्णन पवित्रशास्त्र में कहीं पर भी नहीं मिलता। दूसरे, प्रभु का वचन उन लोगों के विषय में बतलाता है जो व्यर्थ में उपासना करते है। प्रभु यीशु ने कहा, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते है।" (मत्ती 15:9)। आज अधिकांश लोग इसी प्रकार से उपासना करते है। वे प्रभु की उपासना करते हैं, यह सत्य है, किन्तु उनकी उपासना व्यर्थ व शून्य है, क्योंकि वह मनुष्यों की बनाई हुई विधियों तथा शिक्षाओं

के अनुसार है व परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं। तीसरे, परमेश्वर का वचन सच्ची उपासना के विषय में शिक्षा देता है, अर्थात् जो आत्मा और सच्चाई से है। यीशु मसीह ने स्वयं कहा था, "परमेश्वर आत्मा है; और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना 4:24)। केवल यही एक उपासना है जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है। यह उपासना आत्मा से (दीनता और समझ से) तथा सच्चाई से (जिस प्रकार से लिखा है) परमेश्वर को अर्पित की जाती है। उपासना करने के लिये परमेश्वर किसी को भी विवश या बाध्य नहीं करता, किन्तु वे जो उसकी उपासना करते है उन्हें चाहिए कि वे उसकी इच्छानुसार करें।

प्रभु की कलीसिया को किस प्रकार की उपासना करनी चाहिए? निश्चित रूप से, अनजानी उपासना नहीं, और न ही मनुष्यों की बनाई हुई शिक्षाओं अथवा विधियों के अनुसार। इसकी अपेक्षा, हमारी उपासना आत्मा और सच्चाई से होनी चाहिए ताकि वह परमेश्वर को स्वीकारय हो। नए नियम का अध्ययन करने से हमें विभिन्न आज्ञाओं तथा उदाहरणों द्वारा ज्ञात होता है कि आरंभ में मसीही लोग उपासना करने में निम्नलिखित पांच नियमों को उपयोग में लाते थे :

1. **वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये एकत्रित होते थे।** यद्यपि तीमुथियुस को बालकपन से ही पवित्र शास्त्र की शिक्षा मिली थी (2 तीमुथियुस 3:15) तो भी इस युवा प्रचारक को पौलुस उपदेश देता है कि, "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमुथियुस 2:15)। प्रत्येक मसीही को ऐसा ही करना चाहिए। प्रेरितों 20:7 में पढ़ते हैं कि पौलुस सभा में प्रचार करता है ताकि भाइयों को सीखने का अवसर मिले। परमेश्वर अपने वचन

के द्वारा अपने बालकों से बातें करता है।

2. **वे प्रार्थना करते थे।** पिन्तेकुस्त के दिन जब लोगों ने प्रभु की आज्ञा को माना, इसके बाद, हम पढ़ते हैं, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में, और रोटी तोड़ने में, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों 2:42)। प्रार्थना के द्वारा प्रभु के लोग अपने स्वर्गीय पिता से बातें करते हैं।
3. **वे स्तुतिगान गाते थे।** पौलुस ने मसीही भाइयों को लिखा, "और आपस में भजन, और स्तुतिगान, और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों 5:19)। कुलुसियों 3:16 व इब्रानियों 13:15 को भी पढ़िए। संगीत दो प्रकार के होते हैं, अर्थात् कंठ-संगीत तथा वाद्य संगीत। परमेश्वर किस प्रकार का संगीत चाहता है? उसने कंठ-संगीत के उपयोग के लिए आज्ञा दी है। पौलुस कहता है कि हमें अपने मन में प्रभु के सामने कीर्तन करना चाहिए। इसलिए, वाद्य-संगीत के उपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रथम मसीही गाकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थें। सैकड़ों वर्षो के बाद मनुष्यों ने वाद्य-संगीत का उपयोग आरंभ किया, परन्तु न तो परमेश्वर ने इसको उपयोग में लाने का आदेश दिया, और न ही वह इसे स्वीकार करेगा। जिस प्रकार से परमेश्वर की प्रशंसा वाद्य-प्रार्थनाओं के द्वारा नहीं की जा सकती उसी प्रकार से मसीही उसकी स्तुति वाद्य-संगीत बजाकर नहीं कर सकते।
4. **वे प्रभु भोज में भाग लेने के लिये एकत्रित होते थे।** प्रेरितों 20:7 में हमें इसका उदाहरण मिलता है। मत्ती 26:26-28 और 1 कुरिन्थियों 11 अध्याय से हमें शिक्षा मिलती है कि यीशु मसीह की देह को स्मरण करने के लिए हमें रोटी में से खाना चाहिए तथा उसके लोहू को स्मरण

करने के लिये दाखरस पीना चाहिए। व यह हमें सदैव करना चाहिए।

5. **वे अपने अपने धन में से देते थे।** पौलुस ने गलतिया और कुरिन्थुस में मसीहियों को आदेश दिया, "सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।" (1 कुरिन्थियों 16:2)। 2 कुरिन्थियों 9:7 भी पढ़िए।

प्रथम मसीही प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन उपासना करने के लिये एकत्रित होते थे। (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)। उन्हें चिताया गया था, "और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे, और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।" (इब्रानियों 10:25)। आज भी मसीहियों को प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उपासना के इन्हीं नियमों का पालन करना चाहिए तथा ऊपर लिखित चेतावनी को ध्यान में रखना चाहिए।

कलीसिया की उपासना इतनी सरल व सही है कि बहुतेरे लोग इसकी सरलता के कारण ठोकर खाते हैं। वे सोचते हैं कि उपासना में विभिन्न यथाविधियों व परम्पराओं तथा नीरस कार्यों व प्रार्थनाओं का दोहराना इत्यादि सम्मिलित होना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं है। उपासना के विषय में परमेश्वर ने अपनी इच्छा प्रगट की है तथा मनुष्य को यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह इसमें तनिक सा भी बदलाव लाए। इसमें न तो कुछ भी बढ़ाया जा सकता है और न ही कुछ भी घटाया जा सकता है, परन्तु वे जो ऐसा करेंगे वे प्रभु की ओर से स्त्रापित होंगे। परमेश्वर ने आज्ञा दी है और उसके लोगों को चाहिए कि वे उसकी आज्ञा मानें। तभी और केवल तभी परमेश्वर की उपासना, प्रशंसा व स्तुति हो सकती है।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. कलीसिया किस प्रकार से बनी हुई है?

   ....

2. कलीसिया का उद्देश्य क्या है?

   ....

3. प्रभु के नाम में हमें क्या करना है?

   ....

4. नए नियम में हम कितने प्रकार की उपासना के विषय में पढ़ते हैं?

   ....

5. वह कौन सा स्थान था जहां पौलुस ने बहुत सी मूरतों को देखा?

   ....

6. उनकी उपासना के विषय में पौलुस ने क्या कहा?

   ....

7. क्या आज भी ऐसे लोग हैं जो इस प्रकार की उपासना करते हैं?

   ....

8. यह किसने कहा कि ये व्यर्थ में परमेश्वर की उपासना करते हैं?

   ....

9. उनकी उपासना व्यर्थ क्यों थी?

   ....

10. इसके विषय में हम पवित्रशास्त्र में कहां पढ़ते हैं?

    ....

11. क्या आज भी ऐसे लोग हैं जो व्यर्थ में प्रभु की उपासना करते हैं?

    ....

12. सच्ची उपासना क्या है?

    ....

13. यूहन्ना 4:24 में क्या लिखा है?

....

14. आत्मा से परमेश्वर की उपासना करने का क्या अर्थ है?

....

15. सच्चाई से परमेश्वर की उपासना करने का क्या अर्थ है?

....

16. परमेश्वर अपने लोगों से किस प्रकार की उपासना की इच्छा करता है?

....

17. प्रभु के लोगों को किस प्रकार की उपासना करनी चाहिए? ... . इसके विषय में हम कहां पढ़ते हैं?

....

18. उपासना करने के पांच नियमों का वर्णन करें?

....

19. परमेश्वर इन दिनों में मनुष्य से कैसे बोलता है?

....

20. परमेश्वर के बालक परमेश्वर से किस प्रकार से बातें करते हैं?

....

21. दो प्रकार के संगीत क्या है?

....

22. परमेश्वर कौन से संगीत को चाहता है?

....

23. प्रभु भोज क्या है?

....

24. मसीहीयों को सप्ताह के कौन से दिन इकट्ठा होना चाहिए?

....

25. क्या परमेश्वर द्वारा दी गई उपासना करने की विधि में कुछ भी बढ़ाया या घटाया जा सकता है?

....

पाठ–नौ
कलीसिया का कार्य

मसीह ने कलीसिया को क्यों बनाया? इसका क्या उद्देश्य है? इसका क्या कार्य है? यह सब मालूम करने के लिये, आईये, हम परमेश्वर के वचन में से देखें।

सबसे पहले हम निश्चित रूप से यह जान लें कि कलीसिया का कार्य सांसारिक धंधे करना नहीं है, अर्थात् स्कूल तथा हस्पताल खोलकर चलाना, अथवा पैसा बनाने के लिए पुस्तकें छापना व बेचना इत्यादि। यद्यपि ये सब कार्य अच्छे हैं, और हर एक मसीही व्यक्तिगत रूप से इन कार्यों को कर सकता है, परन्तु ये कार्य कलीसिया के करने के नहीं है। आज अधिकांश लोग कलीसिया के नाम में इस प्रकार के कार्य कर रहे हैं, और ऐसा करके कलीसिया के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई योजना, और उसके उद्देश्य व कार्य से एक कदम और पीछे हट रहे हैं।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि कलीसिया का कार्य तीन प्रकार का है। अर्थात् सुसमाचार प्रचार करना, वे जो कि विभिन्न आवश्यकताओं से पीड़ित है उनकी सहायता करना, और कलीसिया की आत्मिक उन्नति के लिय कार्य करना। आइये, हम इनके विषय में एक–एक करके अध्ययन करें :

1. सुसमाचार प्रचार करना।

यीशु मसीह ने प्रेरितों को आज्ञा दी थी, अपने पुनुरुत्थान के तुरन्त बाद और स्वर्गारोहण के पूर्व, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें वे सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है,

मानना सिखाओ, और देखो में जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:19-20)। "और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15, 16)। फिर पौलुस ने युवा प्रचारक तीमुथियुस को आदेश दिया, "कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट और समझा।" (2 तीमुथियुस 4:2)। यहां अन्य पदों का उल्लेख भी किया जा सकता है, इन सब से हमें ज्ञात होता है कि प्रभु कि इच्छा है कि सबको सुसमाचार सुनाया जाए।

अब, कलीसिया ने प्रेरितों के दिनों में क्या किया? सदस्यों ने वही किया जो कि प्रभु ने उन्हें करने को कहा था। उन्होंने प्रभु का वचन प्रचार किया। प्रेरितों के काम नामक पुस्तक उदाहरणार्थ, इस आदर्श से भरी हुई है। नए जन्म के प्रत्येक उदाहरण में हर एक स्थान पर प्रभु की इच्छा प्रकट करने के लिए एक प्रचारक उपस्थित था। पढ़िए, प्रेरितों 2, 8, 9, 10 और 16 अध्याय। परन्तु प्रचार किसने किया? जब यरूशलेम में कलीसिया पर बहुत उपद्रव हुआ, और इसके कारण सब लोग तित्तर-बित्तर हो गए, हम पढ़ते हैं, "जो तित्तर-बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।" (प्रेरितों 8:4)।

फिर, उन्होंने क्या प्रचार किया? यह जानने के लिए भी प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित नए जन्म के उदाहरणों का अध्ययन करें। किन्तु संक्षेप में, उन्होंने शिक्षा दी कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है, उन्होंने बताया कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, कलीसिया का क्या महत्व है, उपासना कैसे करनी चाहिए, व मसीही जीवन में क्या विशेषताएं होनी चाहिए इत्यादि। इसका तात्पर्य पौलुस ने यह कह कर समझाया "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के

निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (1 कुरिन्थियों 1:18)।

इसके अतिरिक्त कि प्रभु ने आज्ञा दी कि उसके वचन का प्रचार होना चाहिए, पौलुस कहता है कि विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। (रोमियों 10:17)। प्रभु यीशु ने कहा, "और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:32)। और हम पढ़ते हैं, "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुने? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उनके पांव क्या ही सोहावने है, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।" (रोमियों 10:14, 15)। इन पदों से हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर है (रोमियों 3:23; 6:23)। इसलिए परमेश्वर के प्रेम का प्रचार अवश्य किया जाना चाहिए (रोमियों 5:8), ताकि सब लोग यह जान लें कि मनुष्य का एक उद्धारकर्ता है (यूहन्ना 3:16), और यह कि परमेश्वर की आज्ञा मानकर कोई भी व्यक्ति अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। (रोमियों 1:16, 17; मरकुस 16:15, 16)। वे जो परमेश्वर को नहीं पहचानते तथा जो उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते वे सबके सब नाश होंगे। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)। इसलिये परमेश्वर के वचन का प्रचार अवश्य किया जाना चाहिए।

2. गरीबों की सहायता करना।

प्रभु के वचन में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया उन लोगों का ध्यान रखती थी जो आवश्यकताओं से पीड़ित थे और जिस प्रकार से सहायता करने के साधन उपलब्ध होते थे उनकी सहायता की जाती थी। प्रेरितों 2:45 में, हम पढ़ते हैं, "और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया

करते थे।" ऐसा वे किसी के बाध्य करने पर नहीं परन्तु अपनी-अपनी इच्छानुसार करते थे। जो यूनानियों तथा इब्रानियों के बीच में हुआ क्योंकि प्रतिदिन की सेवकाई में यूनानी भाषा बोलने वाली विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती थी। इसलिए प्रेरितों ने सब चेलों की मंडली को बुलाकर उनसे कहा कि तुम अपने में से सात पुरुषों को चुन लो ताकि कलीसिया के इस प्रकार के कार्य को करने के लिये उन्हें नियुक्त किया जाए।

हम पौलुस के विषय में पढ़ते हैं कि वह दरिद्र भाइयों को सहायता पहुंचाने के लिए यरूशलेम को जाता है। उसने स्वयं कहा, "क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चंदा करें।" (रोमियों 15:26)। इसी तरह से पौलुस ने कुरिन्थुस में भाइयों को लिखा, "अब उस चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।" (1 कुरिन्थियों 16 1, 2)।

सहायता किसकी करनी चाहिए? स्वभावतः, कलीसिया में दरिद्रों की, सबसे पहले। अर्थात् गरीब, बूढ़े लोग विधवाएं, अनाथ व किसी के ऊपर संकट आ जाए, इत्यादि। हम पढ़ते हैं, "इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सबके साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।" (गलातियों 6:10)। किन्तु हर एक की सहायता नहीं की जा सकती। 1 तीमुथियुस के पांचवें अध्याय से हमें शिक्षा मिलती है कि किसी भी व्यक्ति की सहायता केवल तभी की जानी चाहिए जबकि वह स्वयं की सहायता करने में असमर्थ हो, व उसका कोई ऐसा सम्बन्धी न हो जो उसकी सहायता कर सके, तथा वह

व्यक्ति यथार्थ में एक अच्छा मसीही होना चाहिए। ऐसा इसलिए है ताकि वह धन जो प्रभु का कार्य करने के लिए एकत्रित किया जाता है उसका उपयोग उचित रूप से हो सके, व ऐसे ही हर एक को न दे दिया जाए।

इसके अतिरिक्त, केवल कलीसिया के सदस्यों की ही सहायता नहीं करनी चाहिए परन्तु उन सब लोगों की भी जिनकी सहायता करना उचित हो, और ऐसा केवल तभी हो सकता है जबकि कलीसिया के पास सहायता करने के साधन उपलब्ध हो। याकूब 1:27 तथा याकूब 2 अध्याय को पढ़िए। यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा लोगों के पास सुसमाचार सहित पहुंचा जा सकता है।

किन्तु इस प्रकार का कार्य करने के लिये कलीसिया के पास धन कहां से आता है? धन सदस्यों के द्वारा एकत्रित होता है, जिस प्रकार से भी वे दे सकें। (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 9:6, 7)। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि मसीही लोग देने में असफल रहें, तो साधनों के अभाव के कारण कलीसिया आवश्यकताओं से पीड़ित लोगों की सहायता नहीं कर पाएगी।

3. कलीसिया की आत्मिक उन्नति के लिए कार्य करना।

उन्नति करने का अर्थ आगे बढ़ना, बलवन्त होना, प्रोत्साहित होना, इत्यादि है, अर्थात् कलीसिया के सदस्यों की सहायता करना ताकि वे आत्मिक रूप से शक्तिशाली बनें। आत्मिक उन्नति के लिए क्या आवश्यक है? परमेश्वर का वचन, सहभागिता, उपासना करना, एक दूसरे की सहायता करना, अच्छे कार्य, प्रेम, इत्यादि। बाइबल में से पढ़िए: प्रेरितों 9:31, रोमियों 14:19; 1 कुरिन्थियों 8:1; 1 थिस्सलुनीकियों 5:11; 1 कुरिन्थियों 14:16; 1 कुरिन्थियों 12:19; और इफिसियों 4:12

अन्त में, बहुतेरे लोग आश्चर्य प्रगट करते हैं कि बिना किसी विश्व-व्यापक संगठन के, अथवा बिना एक ऐसे मनुष्य के जो कलीसिया का सिर (प्रधान) हो, और विभिन्न प्रकार से चंदा इकट्ठा किए बिना, कलीसिया ये कार्य किस प्रकार से कर सकती है। किन्तु प्रभु का दिया हुआ मार्ग सबसे उत्तम मार्ग है, केवल उसी के द्वारा बताई हुई विधि अनुसार उसका कार्य करना चाहिए। परमेश्वर की प्रशंसा, प्रतिष्ठा, और महिमा केवल तभी हो सकती है यदि हम उसकी इच्छानुसार उसका कार्य करें व उसकी इच्छानुसार चलें, और ऐसा करके उस उद्देश्य को पूरा करें जिसके लिए हम इस संसार में है। मसीह कलीसिया का सिर है तथा हर एक मंडली व प्रत्येक सदस्य देह का अंग है, और देह की उन्नति के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक अंग अपना-अपना कार्य करे। कलीसिया तभी कार्य कर सकती है जबकि सदस्य अपने पास से दें ताकि यह संभव हो सके।

प्रचार करना, दरिद्रों की सहायता करना तथा सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिए कार्य करना, इन सब का उद्देश्य मनुष्यों की आत्माओं को बचाना है, ताकि अंत में, इन सबके द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। इसके अतिरिक्त कलीसिया का कोई अन्य कार्य नहीं है। राजनीति, सांसारिक धंधे, अथवा कलीसिया को एक सामाजिक संगठन का रूप देना, यह सब परमेश्वर के वचन से अपरिचित है। प्रभु की कलीसिया एक आत्मिक देह है, यद्यपि यह संसार में है परन्तु संसार की नहीं है; परमेश्वर की इच्छा पर चलने और मनुष्य की सेवा करने, तथा पवित्र बने रहने, व अपने बनाने वाले की महिमा करने का प्रयत्न कर रही है। प्रभु की कलीसिया का कार्य तथा उद्देश्य यही है।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. प्रभु की कलीसिया किस प्रकार के कार्य नहीं करती?

   ....

2. क्या धार्मिक संसार विभिन्न प्रकार के कार्य करके पैसा बनाने के लिए दोषी है?

   ....

3. कलीसिया का कार्य क्या है?

   ....

4. मत्ती 28:19, 20 तथा मरकुस 16:15, 16 में प्रभु ने क्या आज्ञा दी?

   ....

5. जब प्रथम मसीही विभिन्न स्थानों में तित्तर-बित्तर हो गए तब उन्होंने क्या किया?

   ....

6. उन्होंने क्या प्रचार किया?

   ....

7. विश्वास कैसे होता है?

   ....

8. स्वतंत्र क्या करता है?

   ....

9. मनुष्य उद्धार कैसे पा सकता है?

   ....

10. नाश कौन होगा?

    ....

11. क्या कलीसिया आवश्यकताओं से पीड़ितों का ध्यान रखती हैं?

    ....

12. यरूशलेम के दरिद्र भाईयों की सहायता के लिए दान किसने दिया?

    ....

13. क्या सबकी सहायता करनी चाहिए?

....

14. सबसे पहले किस की सहायता करनी चाहिए?

....

15. किस स्थिति में सहायता करनी चाहिए?

....

16. वे जो कलीसिया के बाहर है क्या उनकी भी सहायता करनी चाहिए?

....

17. दरिद्रों की सहायता करने के लिये कलीसिया के पास धन कहां से आता है?

....

18. चंदा कब एकत्रित करना चाहिए?

....

19. उन्नति करने का अर्थ क्या है?

....

20. आत्मिक उन्नति के लिए क्या आवश्यक है?

....

21. परमेश्वर की प्रशंसा व प्रतिष्ठा कैसे की जा सकती है?

....

22. कलीसिया का सिर कौन है?

....

23. कलीसिया के कार्य का उद्देश्य क्या है?

....

24. क्या कलीसिया संसार की है?

....

25. राजनीति, सांसारिक धंधे, इत्यादि किससे अपरिचित है?

....

पाठ-दस
कलीसिया की एकता

ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक संसार कलीसिया में एकता लाने के लिये जितना उत्सुक आज है ऐसा पहले कभी नहीं रहा। विश्व भर में लोग इस एक प्रश्न की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहे। इसका वास्तविक कारण यह है कि संसार में अत्यधिक फूट है, व यह हर एक के लिये उलझन का कारण है। सत्य यह है कि मनुष्यों के बनाए हुए धार्मिक संगठनों द्वारा, जो कि एक दूसरे के विरोधी है, एकता कभी भी नहीं लाई जा सकती। यद्यपि कुछ सीमा तक एकता का अनुभव किया जा सकता है परन्तु विभाजन अथवा फूट की समाप्ति नहीं हो सकती। तब इसका उत्तर कहां मिल सकता है? निःसंदेह बाइबल में। यथार्थ में एकता लाने के लिये मनुष्यों को चाहिए कि वे अपनी शिक्षाएं, सिद्धांत, नाम, और अपनी कलीसियाएं तथा धर्मसारों को त्याग दें, और बाइबल को हाथ में लें, उसे पढ़ें व उसका अध्ययन करें, उस पर विश्वास करें, तथा उसकी आज्ञाओं को मानें। केवल तभी सच्ची एकता आ सकती है, उसी प्रकार की एकता जिसके लिये प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, व जिसका उल्लेख यूहन्ना के 17 वें अध्याय में हमें मिलता है। जब लोग ऐसा करेंगे, वे सब विश्वास में एक होंगे, सब एक ही शिक्षा को मानेंगे, सब एक ही नाम से कहलाएंगे, सब एक साथ मिलकर कार्य करेंगे, सब एक ही शिक्षा देंगे, और सब एक साथ स्वर्ग में जाएंगे। जब मनुष्य, मनुष्य का अनुसरण करना छोड़कर मसीह का अनुसरण करने लगेंगे तब एकता का वर्तमान होना बहुत सरल हो जाएगा।

पवित्रशास्त्र विभाजन की निंदा करता है। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर उनसे बैर रखता है जो फूट डालते हैं व भाइयों के बीच

में झगड़ा उत्पन्न करते हैं। (नीतिवचन 6:19)। 1 कुरिन्थियों के पहले अध्याय से हमें ज्ञात होता है कि कुरिन्थुस में कलीसिया विभिाजित हो रही थी। इसकी सराहना करने के विपरीत, प्रेरित पौलुस ने इसका खंडन किया, और इसके मूल कारणों का नाश करने के लिये शीघ्र ही उसने कदम उठाया। उसने कहा, "हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।" (1 कुरिन्थियों 1:10)। फिर उसने तीन प्रश्न पूछे, और प्रत्येक प्रश्न उनकी भ्रांति व अशुद्धि को दर्शाता था। प्रश्न ये थे : क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक थे, इसलिये, उसने उन्हें उनकी विभाजित स्थिति की मूर्खता को बतलाया।

इसी प्रेरित पौलुस ने रोम में भाइयों को लिखा, "अब हे भाइयों, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों 16:17, 18)। इसी प्रकार से कुलुस्सियों 2:20-22 में उसने कहा, "जबकि तुम मसीह के साथ संसार कि आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उनके समान जो संसार में जीवन बिताते है मनुष्यों की आज्ञाओं, और शिक्षानुसार, और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? कि यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना। (क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते-लाते नाश हो जाएंगी)।" (मत्ती 15:9)।

मनुष्यों की शिक्षाओं, व सिद्धांत, और उसकी आज्ञाएं, मनुष्यों

की प्रशंसा करना, बाइबल के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों की स्वीकार करना तथा उनका अनुकरण करना, यह सब वस्तुएं फूट का कारण है। दूसरी ओर एकता आ सकती है परन्तु यह केवल तभी संभव हो सकता है यदि सब मसीह का अनुकरण करने लगे। यीशु मसीह ने स्वयं प्रार्थना करी, "मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करें, कि तू ही ने मुझे भेजा।" (यूहन्ना 17: 20, 21)। अब, क्या यीशु मसीह ने असंभव कार्य के लिये प्रार्थना की? नहीं। निःसंदेह तब एकता का होना संभव है। परन्तु कब? जब हम सब मसीह का अनुसरण करने लगेंगे। मनुष्यों की शिक्षाएं हमें विभाजित करेंगी परन्तु बाइबल की शिक्षा हमें एक करेगी।

इफिसियों 4:1-6 में हमें एकता के लिये एक सूत्र मिलता है। इसको देखें, "सो मैं जो प्रभु में बंधुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।" इस पर ध्यान दें कि यह एकता के लिये एक निवेदन है। और विशेषकर इस पर ध्यान दें कि जितनी भी वस्तुओं का उल्लेख यहां हुआ है वे सब एक-एक हैं। तब यह विचार कैसे उत्पन्न हो गया कि ये एक से अधिक है?

कलीसिया की एकता बहुत स्पष्टता से दिखाई देती है जब हम

पढ़ते हैं, यीशु मसीह ने कहा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (मत्ती 16:18), अर्थात् एक, व यह उसकी आत्मिक देह है (1 कुरिन्थियों 12: 27), और वह स्वयं इसका सिर है (कलुस्सियों 1:18)। नि:संदेह कोई भी व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करेगा कि मसीह की दो देह या दो सिर है। इसके अतिरिक्त 1 तीमुथियुस 3:15 में कलीसिया को परमेश्वर का घर अर्थात् परमेश्वर का परिवार बताया गया है। परन्तु कितने घर या कितने परिवार? अवश्य ही एक। फिर, मसीह के राज्य अर्थात् परमेश्वर के राज्य के विषय में हम पढ़ते है, व यह भी कि मसीह इसका राजा है। (यूहन्ना 3:3-5; कुलुस्सियों 4:11; 1 तीमुथियुस 6:15)। किन्तु प्रभु के कितने राज्य है व राजा कितने हैं? केवल एक, दोनों ही स्थिति में।

इस विषय में जितना भी अध्ययन हम करेंगे हम पाएंगे कि साम्प्रदायिकता अर्थात् फूट के विचार तक से बाइबल विरोध करती है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि बाइबल एकता, सम्पूर्णता, एकभाव, तथा समग्रता को दर्शाती है। बाइबल कलीसिया को इस प्रकार से नहीं दर्शाती की वह एक अध्यात्मिक देह है जो कि भिन्न-भिन्न विश्वास वाले तथा विभिन्न शिक्षाओं को मानने वाले धार्मिक लोगों से मिलकर बनी हुई है, किन्तु बाइबल हमें शिक्षा देती है कि कलीसिया का संबंध यीशु मसीह से है, यह बुलाए हुए लोगों की एक मंडली है, वे लोग जिन्होंने प्रभु यीशु का अनुकरण किया है व उसकी आज्ञाओं को माना है, अर्थात् जिन्हें उद्धार प्राप्त हुआ है वे इसके सदस्य है। न तो मसीह बटा हुआ है और न ही उसकी कलीसिया बटी हुई है। विभाजित होने अथवा विभाजन का समर्थन करने का अभिप्राय यीशु मसीह का विरोध करना व उसकी प्रार्थना का विरोध करना है।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. क्या कलीसिया में एकता लाने के लिये लोग उत्सुक हैं?

   ....

2. एकता के लिये इतनी अधिक उत्सुकता का क्या कारण है?

   ....

3. क्या मनुष्य के बनाए हुए धार्मिक संगठनों द्वारा एकता आ सकती है?

   ....

4. एकता के लिये उत्तर कहां मिलता है?

   ....

5. मनुष्यों को क्या त्याग देना चाहिए ताकि एकता वर्तमान हो जाए?

   ....

6. यह प्रार्थना किसने की कि हम सब एक हो?

   ....

7. एकता का परिणाम क्या होगा?

   ....

8. क्या पवित्रशास्त्र फूट का विरोध करता है?

   ....

9. प्रभु किस से बैर रखता है?

   ....

10. 1 कुरिन्थियों 1:10 का वर्णन कीजिए?

    ....

11. वे तीन प्रश्न क्या थे जो पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया से पूछे?

    ....

12. किस प्रकार के लोगों को ताड़ लेना चाहिए?

....

13. वे किसकी सेवा करते है?

....

14. क्या हमें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए?

....

15. प्रभु की उपासना व्यर्थ में कौन करते हैं?

....

16. यीशु मसीह ने क्या प्रार्थना की?

....

17. क्या उसने किसी असंभव कार्य के लिये प्रार्थना की?

....

18. एकता के सूत्र का वर्णन करें?

....

19. इनमें से हर एक कितने हैं?

....

20. यीशु मसीह ने कितनी कलीसियाएं बनाई?

....

21. कलीसिया क्या है?

....

22. इसका सिर कौन है?

....

23. क्या प्रभु की एक से अधिक देह या एक से अधिक सिर हैं?

....

24. प्रभु के कितने परिवार हैं?

....

25. परमेश्वर का वचन हमें विभाजित करेगा या एक करेगा?

....

पाठ-ग्यारह
कलीसिया का धर्मसार

धर्मसार अंग्रेजी के एक शब्द क्रीड का अनुवाद है, व क्रीड शब्द लैटिन भाषा के क्रीड़ो शब्द से लिया गया है, तथा इसका अर्थ है, "एक विश्वास, धर्म-विश्वास का साधिकार सूत्र; धर्म-विश्वास का मूल सिद्धांत या स्वीकारोक्ति अथवा विचारों का सारांश।" जब कोई व्यक्ति धर्मसार के विषय में विचार करता है तो वह प्राय: "प्रेरितों के धर्मसार" के विषय में विचार करता है अथवा "निसेनी धर्मसार" को दृष्टि में रखता है। किन्तु इन में से किसी का भी उल्लेख बाइबल में नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त, मनुष्यों की बनाई हुई प्रत्येक कलीसिया का अपना-अपना धर्मसार है, अर्थात् इन्तिख़ाबी सबक, दुआ-ए-आम, मॉनुएल, इत्यादि। इस प्रकार की पुस्तकों को उपयोग में लाने का अर्थ परमेश्वर के वचन में बढ़ाना व मिलाना है।

यह कहा जा सकता है कि यदि किसी भी धर्मसार में बाइबल से अधिक लिखा हुआ है तो उसमें बहुत अधिक है। इसी प्रकार से यदि किसी धर्मसार में बाइबल से कम लिखा हुआ है तो उनमें बहुत थोड़ा है। तथा वह धर्मसार, जिसमें बाइबल से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, व्यर्थ है, क्योंकि हमारे पास पहले ही से बाइबल है। प्रकाशितवाक्य 22:18, 19 तथा गलतियों 1:6-9 में हमें चेतावनी मिलती है कि परमेश्वर के वचन में कोई भी मनुष्य न तो कुछ बढ़ाए, न घटाए और न ही कुछ भी बदले। दूसरे शब्दों में पवित्रशास्त्र संपूर्ण है (2 तीमुथियुस 3:16, 17), तथा सिद्ध है (याकूब 1:25), और हमें केवल वैसे ही बोलना चाहिए जैसे परमेश्वर का वचन हो। (1 पतरस 4:11)। इसलिये किसी भी अन्य पुस्तक या पुस्तकों की कोई आवश्यकता नहीं।

आज धर्मसंसार में इतनी अधिक फूट हम देखते हैं। ऐसा इसलिये नहीं है कि लोगों ने परमेश्वर के वचन का अनुकरण किया हो, परन्तु इसका कारण यह है कि उन्होंने मनुष्यों के धर्मसारों को स्वीकार किया है। इस पर अधिक बल दिया जाता है कि हर एक कलीसिया के अपने-अपने नियम

इत्यादि होने चाहिए, इसी से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाइबल को त्याग दिया गया है। यह कितना शोक जनक है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति से हमारा निवेदन है कि मनुष्यों के धर्मसारों को त्याग कर बाइबल की ओर फिरे तथा उसी का अनुकरण करे, जो कि परमेश्वर का वचन है। बाइबल हमें विभाजित नहीं करेगी परन्तु यीशु मसीह में एक करेगी।

प्रभु की कलीसिया का धर्मसार क्या है? मसीह के अतिरिक्त कोई अन्य हमारा उद्धारकर्त्ता नहीं है, और बाइबल के अतिरिक्त कोई दूसरा धर्मसार नहीं है। धर्म के विषय में मनुष्यों के निजि विचार व दृष्टिकोण व्यर्थ है। हमारे पास बाइबल की कोई निजि व्याख्या नहीं है। जो कुछ भी हमारे पास है वह केवल बाइबल है। हमने इसकी शिक्षा को माना है व यही करने के लिए हम दूसरों को भी बताते है। हमारा निवेदन हर एक से यही है कि इसे पढ़ें व इसका अध्ययन करें (यूहना 5:39; 2 तीमुथियुस 2 तीमुथियुस 2:15), तथा हर एक स्थान में हम लोगों को उकसाते है कि वे केवल वही करें जो शिक्षा यह देती है।

हम किसी अन्य पुस्तक अथवा पुस्तकों का अनुकरण नहीं करते। हमारा तनिक भी यह विश्वास नहीं है कि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो नियम और व्यवस्था की एक पुस्तक लिख सके जो कि बाइबल के समान हो। न ही प्रभु ने किसी को अधिकार दिया है कि इस प्रकार की पुस्तक लिखे। हम यह भी विश्वास नहीं करते कि किसी भी व्यक्ति को पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा मिली हो कि वह बाइबल के समान कोई अन्य पुस्तक लिखे।

बाइबल परमेश्वर का वचन है, व केवल परमेश्वर का वचन ही परमेश्वर की ओर से आया है, इसे परमेश्वर द्वारा प्रेरणा पाकर लिखा गया है, और केवल इसी के द्वारा हमें उद्धार मिल सकता है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर का वचन ही अंत के दिन हमारा न्याय करेगा (यूहन्ना 12:48)। इसी कारण, तथा बहुतेरे अन्य कारणों हेतु, धर्म के विषय में हम इसी को एकमात्र पथदर्शक स्वीकार करते हैं, और अन्य लोगों को भी ऐसा ही करने के लिये प्रोत्साहित करते है।

सत्य को जानने के लिये हम बाइबल के निकट जाते हैं, क्योंकि यह सत्य है (यूहन्ना 17:17; यूहन्ना 8 :32)। जब तक आप सत्य के स्रोत के पास न जाएं आप को सत्य नहीं मिल सकता। इसलिये सत्य पर विश्वास करने के लिये अति-आवश्यक है कि आप सत्य को सुनें। (रोमियों 10:17)। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं कि धर्म विषयों में अधिकांश लोग धोखे में है। इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं कि धर्म संसार में अत्यधिक फूट तथा अस्त-व्यस्तता पाई जाती है। इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य सहायता के लिये प्रभु के पास न जाकर मनुष्यों के पास जाता है। जो बाइबल में लिखा है मनुष्य उसे छोड़कर मनुष्यों की शिक्षाओं की ओर फिर गया है। तब, निःसंदेह, मनुष्य को अवश्य ही बाइबल की ओर फिरना चाहिए यदि वह सचमुच उद्धार पाना चाहता है।

हम लोगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि कलीसिया के विषय में सच्चाई को मालूम करने के लिये वे बाइबल का अध्ययन करें। संसार में बहुतेरी कृत्रिम (बनावटी) कलीसियाएं हैं। कौन सी सही है? क्या प्रत्येक के विषय में अलग-अलग से विचार करना आवश्यक है? नहीं। मनुष्य को चाहिए कि वह उस पुस्तक में से देखे जो कलीसिया के विषय में सत्य को प्रकट करती है। प्रभु की कलीसिया के विषय में सच्चाई को एक बार जान लेने के बाद उस एक कलीसिया को पहचानने में जो बाइबल की शिक्षा का अनुकरण करती है कोई भी कठिनाई नहीं होगी।

हम मनुष्य को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वह इस सत्य को जानने के लिये, कि मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए, बाइबल का अध्ययन करे। मनुष्यों की शिक्षाओं के अनुसार उद्धार प्राप्त करने के विभिन्न मार्ग है, परन्तु परमेश्वर का वचन बड़े ही सरल ढंग से बताता है कि उद्धार पाने के लिये, मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य को सुने, उस पर विश्वास करे, अपने पापों से मन फिराए, यीशु मसीह का अंगीकार करे, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (मरकुस 16: 15, 16; मत्ती 10 : 32; प्रेरितों 2:38)। मनुष्य चाहे कुछ भी कहे, परन्तु सत्य यह है कि

केवल प्रभु ही उद्धार करता है, और इसलिये हमें चाहिए कि उद्धार पाने के लिये उसी की सुने व माने।

हम लोगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वे बाइबल का अध्ययन करें, और मालूम करें कि यथार्थ में परमेश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए। मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार से परमेश्वर की उपासना करते है, किन्तु यथार्थ से उपासना करने की विभिन्न विधियां नहीं है। बाइबल की शिक्षानुसार केवल एक ही मार्ग है व प्रभु ने अपने वचन में इसे विशेष रूप से दर्शाया है। (यूहन्ना 4:24)।

न केवल इन्हीं विषयों के लिये, परन्तु उन सब विषयों के लिये भी जो मुक्ति तथा जीवन, और धार्मिकता से संबंध रखते हैं, हम हर एक व्यक्ति से आग्रह करते हैं कि इनके बारे में सच्चाई को जानने के लिये बाइबल की ओर फिरे व अध्ययन करे। बहुतेरे लोगों का विचार है कि बाइबल को ठीक से नहीं समझा जा सकता, व यह कि सब इसको समान रूप से नहीं समझ सकते। यह कथन असत्य है व भ्रम पूर्वक है। शैतान चाहता है कि मनुष्य बाइबल से दूर रहे ताकि उसे उद्धार न मिल सके। परन्तु मुक्ति पाने के लिये मनुष्य को अवश्य ही इसके निकट आना चाहिए; इस पर विश्वास करके, धर्म-विषयों में केवल इसी को एकमात्र पथदर्शक स्वीकार करना चाहिए। केवल तभी उसे मुक्ति मिल सकेगी, क्योंकि केवल तभी वह सही होगा।

हमारा धर्मसार क्या है? यीशु मसीह और उसका वचन, व इसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। हमारा अटल विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है तथा उसका वचन सुनिश्चित अपरिवर्तनीय है। हमने उसे स्वीकार किया है व उसी का अनुकरण करते हैं। हम आप से आग्रह करते हैं कि आप भी ऐसा ही करें। मनुष्यों के धर्मसार आपको केवल एक ही स्थान पर पहुंचा सकते हैं- अर्थात् नरक में। प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग ओर सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. धर्मसार का अर्थ बताइए?
....

2. मनुष्य की बनाई हुई कलीसियाओं (सम्प्रदायों) के पास क्या होता है?
....

3. वे जो परमेश्वर के वचन में जोड़ते व उसमें से घटाते हैं उनके साथ क्या होगा?
....

4. क्या पवित्रशास्त्र सम्पूर्ण है?
....

5. सिद्ध क्या है?
....

6. हमें किस प्रकार से बोलना चाहिए?
....

7. क्या बाइबल के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों की आवश्यकता है?
....

8. आज धर्म–संसार इतना अधिक विभाजित क्यों है?
....

9. क्या बाइबल की शिक्षा हमें विभाजित करेगी?
....

10. प्रभु की कलीसिया का धर्मसार क्या है?
....

11. क्या धर्म–विषय में हमारे निजि विचार व दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं?
....

12. क्या हमें बाइबल की निजि व्याख्या करने का अधिकार है?
....

13. क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो बाइबल के समान एक पुस्तक लिख सके?

....

14. क्या प्रभु ने किसी व्यक्ति को बाइबल के समान अन्य पुस्तक लिखने का अधिकार दिया है?

....

15. परमेश्वर का वचन कहां से आया है?

....

16. किस का वचन अंत के दिन हमारा न्याय करेगा?

....

17. सत्य क्या है?

....

18. मनुष्य सहायता के लिये किस के पास जाता है?

....

19. कलीसिया के विषय में सच्चाई को मालूम करने के लिये हमें किस पुस्तक में से देखना चाहिए?

....

20. क्या उद्धार प्राप्त करने के बहुत से मार्ग है?

....

21. बाइबल की शिक्षानुसार उद्धार प्राप्त करने के लिये मनुष्य को क्या करना चाहिए?

....

22. क्या प्रभु ने अपने वचन में उपासना करने की विधि के विषय में बताया है?

....

23. क्या बाइबल को समझा जा सकता है?

....

24. क्या हम सब बाइबल को समान रूप से समझ सकते हैं?

....

25. स्वर्ग में जाने का एकमात्र मार्ग क्या है?

....

पाठ–बारह
कलीसिया का इतिहास

प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में प्रभु की कलीसिया अर्थात् राज्य की स्थापना या आरंभ होने की अवस्था को दर्शाया गया है। प्रेरित जन यरूशलेम में है, उन पर पवित्र आत्मा उंडेला गया, तथा बहुत से देशों के लोग वहां पर एकत्रित है क्योंकि वे पिन्तेकुस्त के लिये वहां पर आए है, पतरस अन्य प्रेरितों के साथ खड़े होकर बताता है कि यह सब उसी के अनुसार है जो कि योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, यीशु मसीह की मृत्यु के पश्चात अंत के दिनों का आरंभ हो चुका है, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार किया गया, लगभग तीन हज़ार मनुष्यों ने सुसमाचार सुना और बपतिस्मा लिया, और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाया। तब यरूशलेम से लेकर सारे यहूदिया और सामरिया व पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार प्रचार किया गया तथा आकाश के नीचे की सारी सृष्टि ने सुना। (प्रेरितों 1:8; मत्ती 28: 19, 20; मरकुस 16:15, 16; कुलुस्सियों 1:23)।

प्रेरितों के दिनों में कलीसिया ने बहुत उन्नति की। यह शीघ्रता से बढ़ी। पौलुस के मसीही बन जाने के बाद, उसने तीन प्रचारक यात्राएं की, सुसमाचार का प्रचार उसने केवल यहूदियों में ही नहीं परन्तु अन्य जातियों में भी किया। परिणाम स्वरूप बहुतेरे लोगों ने विश्वास किया तथा प्रभु की कलीसिया की अनेक मंडलियां एशिया और यूरप में स्थापित हुई। किन्तु यह सब सरलता से नहीं हो गया, क्योंकि उन दिनों में मसीहीयों पर बड़ा उपद्रव हो रहा था। उपद्रव का आरंभ सबसे पहले यरूशलेम में हुआ, व इसके कारण चेले इधर–उधर तित्तर–बित्तर हो गए, और विभिन्न स्थानों में सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। (प्रेरितों 8:1–4)। जैसे–जैसे समय व्यतीत होता गया, रोमी लोग

मसीहीयों की निन्दा करने व अकारण ही उन पर दोष लगाने लगे, तथा रोम और समस्त रोमी साम्राज्य में उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाने लगा। अन्त में पौलुस को भी बंदी बनाकर जांच के लिये रोम ले जाया गया। संसार का इतिहास हमें बताता है कि यूहन्ना के अतिरिक्त सारे प्रेरितों को मसीह के कारण शहीद होना पड़ा। सैकड़ों व हज़ारों और कदाचित लाखों अन्य मसीहियों को भी अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ी।

इतना अधिक अत्याचार होते हुए भी कलीसिया दिन प्रतिदिन बढ़ी और फैली। वह उपद्रव नहीं था जिस के कारण कलीसिया को अत्यंत आघात सहना पड़ा, परन्तु इसका कारण स्वयं कलीसिया के ही बीच में से था। प्रेरित पौलुस ने पहले ही से उस दिन के विषय में बता दिया था जबकि धर्म का त्याग होने को था। दूसरे शब्दों में वह यह कह रहा था कि इस प्रकार के दिन आएंगे जब प्रभु की कलीसिया के अनेक सदस्य सत्य से फिर जाएंगे। आईये, इस पर ध्यान दें कि वह क्या कह रहा है: "हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इक्ट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं। कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, या समझ कर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ। किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है। क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि, जब मैं तुम्हारे यहां था, तो तुम से यह बातें कहा करता था? और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकने वाला है, और जब

तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अदभुत काम के साथ, और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता। और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते वरन् अधर्म से प्रसन्न होते है, सब दण्ड पाए।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12)। यहां देखें कि पौलुस ने कहा कि अधर्म का भेद उन के बीच में उस समय भी कार्य कर रहा था। उसने आगे कहा, "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा; जिन का विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो व्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं" (1 तीमुथियुस 4:1-3)। इसी प्रकार से इफिसुस में कलीसिया के अध्यक्षों से वार्तालाप करते हुए पौलुस ने कहा, "इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहाकर, हर एक को

चितौनी देना न छोड़ा। "(प्रेरितों 20:28-31)।"

जिस प्रकार से पौलुस ने चेतावनी दी थी, कलीसिया के बीच में से बहुतेरे ऐसे लोग उठेंगे जो मसीह के अनुयायीओं को बहकाने व अपनी और खींचने लगे। संसार का इतिहास हमें बताता है कि धर्म के त्याग का आरंभ कलीसिया के नियंत्रण पर आक्रमण से हुआ। प्रभु की योजनानुसार हर एक मंडली अन्य मंडलियों से स्वतंत्र होनी चाहिए व प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष तथा सेवक होने चाहिए। किन्तु, ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया बहुत सी मंडलियां एक अध्यक्ष अर्थात् बिशप को अन्य मंडलियों पर ऊंचा करने लगी, और फिर कुछ समय के बाद एक बिशप को अधिकार मिल गया कि वह अनेक मंडलियों पर नियंत्रण रखे, इसका अंतिम परिणाम यह निकला कि एक व्यक्ति को सम्पूर्ण कलीसिया पर सार्वदेशिक बिशप नियुक्त कर दिया गया। निःसंदेह, यह सब एक ही दिन में नहीं हो गया, परन्तु इसे कई वर्ष लगे। और इस प्रकार लगभग 606 ई. सं. में पहला सार्वदेशिक बिशप कलीसिया के धर्म-त्यागी खंड का सिर (प्रधान), अथवा पोप बन गया, इस खंड को आज हम कैथलिक कलीसिया के नाम से जानते है। अब, प्रभु की कलीसिया का क्या हुआ? कुछ विश्वासी जन विश्वास में दृढ़ बने रहे, कदाचित संख्या में कम होने के कारण वे ध्यान रहित रहे, किन्तु प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसका राज्य अर्थात् उसकी कलीसिया अन्त तक दृढ़ रहेगी, और ऐसा होना आवश्यक था।

जहां तक धर्म-संसार का संबंध था, कैथलिक कलीसिया का प्रभाव बढ़ गया। वस्तुतः इसने संसार पर इस प्रकार नियंत्रण किया कि बाद के कई सौ वर्षों को अंधकार का युग कहा जाने लगा। इसका मूल कारण यह था कि कैथलिक कलीसिया ने आम आदमी को बाइबल पढ़ने से रोक दिया, उसका कहना था कि केवल याजक लोग ही बाइबल को पढ़ने व समझने के योग्य है, और इसलिये केवल वे लोगों को ठीक से बता सकेंगे कि बाइबल क्या शिक्षा देती है। स्वभावतः

इसका अभिप्राय यह हुआ कि उन्होंने लोगों को केवल वही बताया जो वे बताना चाहते थे।

इसी समय के बीच कैथलिक कलीसिया भी छिड़काव और वाद्यसंगीत जैसी शिक्षाओं के आधार पर रोमी तथा यूनानी शाखाओं में विभाजित हो गई। समय के व्यतीत होने के साथ-साथ रोमन कैथलिक कलीसिया ने अपनी समिति इत्यादि के द्वारा अपनी प्रणाली में और बहुत से अन्य सिद्धान्त व अनेक शिक्षाएं जोड़ ली। अन्त में, 1500 ई. स. तक शिक्षा व नैतिक दृष्टिकोण से कैथलिक कलीसिया इतनी अधिक भ्रष्ट हो गई कि मार्टिन लूथर नाम के एक व्यक्ति ने, जो स्वयं कैथलिक कलीसिया का एक याजक था, कलीसिया का संशोधन करने का निश्चय किया। किन्तु उसका बहिष्कार कर दिया गया, और उसने कलीसिया को त्याग कर लोगों को वही शिक्षा देना व करना आरंभ कर दिया जिसे वह उचित समझता था। इसी के मध्य से संशोधन आन्दोलन अर्थात् प्रोटेस्टन्टइज़्म् का जन्म हुआ, व इस संशोधन आन्दोलन ने आधुनिक युग के सम्प्रदायों (डिनॉमिनेशन) को जन्म दिया। लूथर की गतिविधि की चर्चा शीघ्र ही संसार के अनेक भागों में फैल गई और लोग बाइबल की ओर वापस फिर आने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु फिर भी पूर्ण रूप से सफल न हुए।

सत्रह व अठारह सौ ई. स. में यूरप और अमेरिका में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अत्यधिक विभाजन तथा फूट के कारण खीझ उठे। परिणाम स्वरूप, वे लोग उन गलत शिक्षाओं को त्यागने लगे जिनको वे मानते थे और सम्पूर्णता से बाइबल का अनुकरण करने का प्रयत्न करने लगे। उनकी इच्छा एक नई कलीसिया को आरंभ करने की नहीं थी, परन्तु उस एक कलीसिया में वापस आने की थी जिसके विषय में वे परमेश्वर के वचन में पढ़ते थे। अतः वे इसमें सफल हुए, और उसी समय से सच्ची नए नियम की मसीहीयत का प्रचार समस्त संसार में किया जाने लगा, व लाखों लोग मनुष्यों की शिक्षाओं को त्याग कर

यथार्थ में मसीही बनने लगे, और प्रभु की कलीसिया के सदस्य हो गए, ये लोग केवल बाइबल को ही अपना एकमात्र मार्गदर्शक व अगुआ स्वीकार करते थे। संसार के विभिन्न भागों में मसीही लोग सत्य का प्रचार करने के लिये गए, और उन्हें ज्ञात हुआ कि अफ्रीका, भारत, रूस, पौलैण्ड और अनेक अन्य स्थानों में कहीं-कहीं कलीसिया पहले से ही यथार्थ में विद्यमान है। कलीसिया, इसलिये आरंभ से लेकर आज तक वर्तमान है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि इसके विषय में आरंभ से विचार किया जाए, यह सिद्ध करने के लिये कि यह बाइबल की एक सच्ची कलीसिया है। कलीसिया का आदर्श बाइबल में मिलता है और जब हम उसका अनुसरण करते हैं तो उसका परिणाम प्रभु की कलीसिया होता है। परमेश्वर का वचन बीज है (लूका 8:11) और आज भी वही उत्पन्न होगा जो प्रेरितों के दिनों में हुआ यानि मसीही तथा मसीह की कलीसिया के सदस्य। हम जानते है कि प्रभु का राज्य सदा बना रहेगा। इसलिये इसकी स्थापना के दिन से लेकर आज तक यह विद्यमान रहा है, और इसी प्रकार से यह सदा दृढ़ बना रहेगा, और कोई भी मनुष्य या शैतान इतना सामर्थी नहीं है कि इसको नाश कर सके। यह प्रभु का राज्य है, उसकी कलीसिया, यह आदि से अंत तक विजयी होकर अपने प्रभु के साथ सदा तक स्थिर रहेगी।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. प्रभु की कलीसिया की स्थापना के विषय में बाइबल में हम कहां पढ़ते हैं?
....
2. इसकी स्थापना किस नगर में हुई थी?
....
3. उस समय कलीसिया में कितने लोग मिलाए गए थे?
....
4. सुसमाचार प्रचार कहां–कहां किया गया?
....
5. पौलुस ने कितनी प्रचारक यात्राएं की?
....
6. क्या पौलुस ने केवल यहूदियों में ही प्रचार किया?
....
7. पौलुस के कार्य के परिणाम स्वरूप किन दो महाद्वीपों में कलीसिया की स्थापना हुई?
....
8. जब चेले तित्तर बित्तर हो गए तो उन्होंने क्या किया?
....
9. प्रभु की कलीसिया को किसने सताया?
....
10. कितने प्रेरितों को उनके विश्वास के कारण मरवा दिया गया?
....
11. क्या उपद्रव के होते हुए भी कलीसिया ने उन्नति की?
....
12. पौलुस ने क्या चेतावनी दी थी कि आने वाले दिनों में होगा?
....

13. कलीसिया पर आक्रमण किस प्रकार से आरंभ हुआ?
....

14. 606 ई. स. में क्या हुआ?
....

15. प्रभु की कलीसिया का क्या हुआ?
....

16. बाद के सैंकड़ों वर्षों को अंधकार का युग क्यों कहा जाता है?
....

17. कैथलिक कलीसिया कौन-सी दो शाखाओं में बट गई?
....

18. उस व्यक्ति का क्या नाम था जिसने रोमन कैथलिक कलीसिया को सुधारने का निश्चय किया?
....

19. इस को सुधारने का प्रयत्न उसने क्यों किया?
....

20. परिणाम स्वरूप किस आन्दोलन का आरंभ हुआ?
....

21. क्या वे संपूर्णता से बाइबल की ओर फिर आने में सफल हुए?
....

22. सत्रह व अठारह सौ ई. स. में क्या हुआ?
....

23. प्रभु की कलीसिया के आदर्श के लिये बाइबल की ओर फिर कर क्या इन लोगों ने एक नई कलीसिया का आरंभ किया?
....

24. क्या मसीहियों ने सच्ची कलीसिया को संसार के अन्य भागों में पहले से ही विद्यमान पाया?
....

25. क्या आज मसीह की सच्ची कलीसिया वर्तमान है?
....

पाठ-तेरह
वर्तमान कलीसिया

प्रभु की कलीसिया की स्थापना लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुई थी (प्रेरितों 2) परन्तु यह आज भी उसी प्रकार से वर्तमान है जिस प्रकार से उस समय थी। "किन्तु यह कैसे संभव हो सकता है" कदाचित आप पूछें। नए नियम में कलीसिया के आदर्श का अनुकरण करने से।

कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि यह सिद्ध करने के लिये कि आज की कलीसिया वही कलीसिया है जिसे प्रभु ने स्थापित किया था हमें पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर अब तक विस्तार पूर्वक इसके विषय में विचार करना चाहिए। किन्तु इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। सबसे पहले हम यह जानते हैं कि प्रभु ने कहा कि उसके राज्य अर्थात् उसकी कलीसिया का कभी भी अंत नहीं होगा और वह सदा तक स्थिर रहेगी। (दानिय्येल 2:44; लूका 1:33; इब्रानियों 12:28)। इसका अभिप्राय यह हुआ कि आरंभ से लेकर अब तक कहीं न कहीं कलीसिया अवश्य ही विद्यमान रही है। इसको हर एक स्थान पर हर समय रहने की आवश्यकता नहीं थी। दूसरी ओर, राज्य का बीज (लूका 8:11)। हमारे पास नए नियम के वचनों में सुरक्षित है। जबकि इसने प्रेरितों के दिनों में मसीही उत्पन्न किए, यह आज भी मसीही ही उत्पन्न करेगा। और जबकि ये जो प्रेरितों के दिनों में मसीही बनें सब मिलकर एक कलीसिया थे तब आज भी वैसा ही है। इसलिये, जहां कहीं भी नया नियम है वहां प्रभु की कलीसिया

का होना संभव है, यदि वे लोग जिनके पास यह है इसका अनुकरण करें।

परमेश्वर ने अपने लोगों को अनुसरण करने के लिये सदा एक आदर्श दिया है। उसने नूह को एक आदर्श दिया ताकि जहाज़ बनाने के लिये वह उसका अनुसरण करे। (उत्पत्ति 6)। उसने मंदिर बनाने के लिये मूसा को एक आदर्श दिया, व इसके साथ ही यह चेतावनी भी दी, "कि देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना। (इब्रानियों 8:5)। और इसी प्रकार से प्रभु की कलीसिया का संपूर्ण आदर्श हमें नए नियम में दिया गया है। जिस प्रकार से नूह और मूसा को परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्शों का अनुसरण करना आवश्यक था, उसी प्रकार से कलीसिया के आदर्श का हमें भी अनुसरण करना चाहिए। और जिस प्रकार से नूह और मूसा ने परमेश्वर के आदर्श का अनुसरण जहाज व मन्दिर बनाने में किया, व परिणाम स्वरूप परमेश्वर प्रसन्न हुआ, इसलिये जब हम कलीसिया के आदर्श का अनुसरण करेंगे, परमेश्वर ऐसा करने से प्रसन्न होगा क्योंकि तब कलीसिया उसी की इच्छानुसार वर्तमान होगी, बिना उसकी इच्छा में कुछ भी जोड़े या घटाए। (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)।

कलीसिया की पहचान के सभी चिन्ह बहुत ही स्पष्टता से नए नियम में दर्शाए गए हैं। प्रभु ने अपने वचन के द्वारा प्रकट किया है कि कलीसिया क्या है, इसको किसने बनाया, इसकी स्थापना कब हुई, इसका क्या नाम है, इसके सदस्यों का नाम क्या है, इसके सदस्य किस प्रकार से बनते हैं, इसकी उपासना और इसका कार्य क्या है?

इसके अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि इसका सिर (प्रधान) कौन है, यह किस मूल्य से मोल ली गई है, इसका उद्धारकर्ता कौन है, इत्यादि। कलीसिया के विषय में प्रभु ने हमें किसी प्रकार से भी संदेह में नहीं रखा है, परन्तु स्पष्टता से बताया है कि यह क्या है, व इसका उद्देश्य तथा कार्य क्या है। यह आदर्श उतना ही स्पष्ट है जितना कि परमेश्वर का वचन है।

इसलिये बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया को जानने व समझने के लिये हमें केवल इतना ही करना है कि हम बाइबल का अध्ययन करें। इसके विषय में सच्चाई को जान लेने के बाद यदि हम उसका अनुसरण करेंगे, तो हम इसके सदस्य बन जाएंगे और इसी रीति से वही कलीसिया जिसे मूल में मसीह ने स्थापित किया था। बीज अपने स्वभाव के अनुसार ही उत्पन्न करता है, और परमेश्वर का वचन भी मसीही व मसीह की कलीसिया के सदस्य ही उत्पन्न करेगा, ठीक उसी प्रकार से जैसे इसने पहले किया।

मसीह की कलीसिया समस्त संसार में वर्तमान है। कलीसिया किसी भी समय और कहीं भी वर्तमान हो सकती है, परन्तु ऐसा केवल तभी हो सकता है यदि मनुष्य बाइबल की शिक्षा का अनुसरण करे। संसार के किसी भी भाग में जहां लोग परमेश्वर की इच्छानुसार चलना छोड़ देंगे वहां पर यह समाप्त हो जाएगी।

आज मसीह की कलीसिया उन्नति कर रही है वह बढ़ रही है क्योंकि यह केवल बाइबल का अनुकरण करती है। यह विभाजन तथा फूट का विरोध करती है व मसीह की प्रशंसा करती है। यही एक कलीसिया है जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ सकते है।

यह एक सम्प्रदाय अथवा किसी प्रकार का कोई अन्य समुदाय नहीं है। यह प्रोटेस्टैन्ट, कैथलिक, या साम्प्रदायिक नहीं है। तब यह क्या है? केवल प्रभु की कलीसिया। व इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का कोई प्रधान (सिर) अथवा प्रधान कार्यालय नहीं है। हम किसी मनुष्य की बढ़ाई नहीं करते। किसी भी व्यवस्था या संगठन को जो मनुष्य की बुद्धि की उपज है हम स्वीकार नहीं करते। प्रत्येक मंडली स्वाधीन है और उसका संगठन स्थानीय है व हर एक मंडली के अपने अध्यक्ष और सेवक, प्रचारक, शिक्षक, और सदस्य है। एक सदस्य दूसरे सदस्यों से बढ़कर नहीं है क्योंकि प्रभु की कलीसिया में क्लेर्जी तथा लेइटी जैसी कोई वस्तु नहीं पाई जाती।

सदा से ही मसीह की कलीसिया के बहुतेरे शत्रु रहे हैं और आज भी हैं। मनुष्यों के धर्म संगठन इसका विरोध करते है क्योंकि यह उनकी शिक्षाओं का अनुकरण नहीं करती। वे हम से ईर्ष्या करते है क्योंकि हम उनके साथ किसी प्रकार की सहभागिता नहीं करते। वे खूब जानते है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो केवल बाइबल का ही अनुकरण करने में प्रयत्नशील हैं, और जबकि वे स्वयं मनुष्यों की शिक्षाओं पर चलते है। उनको यह भी ज्ञात है कि हम मसीह का अनुसरण करते है और उसके नाम को अपने ऊपर रखते हैं, जबकि वे मनुष्यों का अनुसरण करते व मनुष्यों के नामों को अपने ऊपर रखते हैं। हमारे विरूद्ध उनके हथियार सत्य नहीं है, परन्तु उनके मनों का पूर्वद्वेष और हमारे विषय में असत्य कथन देना इत्यादि है। किन्तु उनका परिश्रम व्यर्थ है।

प्रभु की कलीसिया सदा से ही विजयी रही है। संसार में से सब शत्रु तथा नरक के सब शैतान इस पर प्रबल नहीं हो सकते। यह गिनती में उनसे भले ही छोटी हो जो इसके चारों ओर पाई जाती है, परन्तु जिनका उद्धार होगा वे थोड़े ही हैं। (मत्ती 7:13, 14)। यीशु मसीह की केवल एक ही कलीसिया है और वह एक दिन अपनी उस एक कलीसिया के लिये वापस आएगा। (इफिसियों 5:27; यूहन्ना 14:1-6)। वह अपने राज्य का राजा है और वह इसके लिये आएगा और इसे परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। (1 कुरिन्थियों 15:24)। उसकी केवल एक ही दुल्हिन है (प्रकाशितवाक्य 21:9), और अपनी उस दुल्हिन को लेने के लिये, जो उसका नाम अपने ुपर रखती है, एक दिन वह आ रहा है। परन्तु अन्य का क्या होगा? वह उनसे खुलकर कह देगा कि वह उनको नहीं जानता। वह उनको उखाड़ देगा। (मत्ती 15:13)। और उन्हें इकट्ठा करके आग में फेंक दिया जाएगा।

आज हमारा निवेदन सच्ची नए नियम की मसीहीयत के लिये है। हमारा आपसे यह आग्रह है कि आप परमेश्वर के वचन की ओर फिरें और केवल उसी को अपना पथदर्शक स्वीकार करें। बाइबल को पढ़कर सच्चाई को जानें। जो यह शिक्षा देती है वही करें, तब आप उद्धार पाएंगे और प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा, जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ते है।

यदि आप मसीह की कलीसिया के सदस्य नहीं है तब हम आपको प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि आप इसके सदस्य बनें। परमेश्वर पर विश्वास कीजिए, अपने पापों से मन फिराइए, प्रभु

यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कीजिए, और बपतिस्मा लीजिए ताकि आप को उद्धार मिले। (मरकुस 16:16; रोमियों 10:9, 10; प्रेरितों 2:38)। तब प्रभु अपनी कलीसिया में आपको मिलाएगा व आप एक मसीही बन जाएंगे। (प्रेरितों 2, 47; प्रेरितों 11:26)। क्या आप ऐसा करेंगे? यह सब करने के लिये कोई आपको विवश या बाध्य नहीं कर रहा है, परन्तु हमारा विश्वास है कि यदि आप अपनी बाइबल का अध्ययन करेंगे तो आप यथार्थ में मसीही बनना चाहेंगे और इसी रीति से अपने आगे का जीवन प्रभु के लिये व्यतीत करना चाहेंगे, व उसके राज्य और सुसमाचार को फैलाने का प्रयत्न करेंगे।

प्रश्न

सही उत्तर लिखिए :

1. कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?
   ....
2. क्या कलीसिया आज भी वर्तमान है?
   ....
3. यह सिद्ध करने के लिये कि यह प्रभु की कलीसिया है क्या इसके विषय में शताब्दियों से विचार करने की आवश्यकता है?
   ....
4. राज्य का बीज क्या है?
   ....
5. कब तक के लिये प्रभु ने कहा कि उसका राज्य स्थिर होगा?
   ....
6. बीज आज क्या उत्पन्न करेगा?
   ....
7. नूह तथा मूसा को परमेश्वर ने क्या दिया?
   ....
8. प्रभु की कलीसिया का आदर्श कहां दिया गया है?
   ....
9. प्रभु की कलीसिया की पहचान के चिन्ह कहां पर दर्शाए गए हैं?
   ....
10. अपने वचन में प्रभु ने कलीसिया के विषय में क्या बताया है?
    ....
11. बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया के विषय में हम कैसे जान सकते है?
    ....
12. मसीह की कलीसिया आज किस स्थान पर वर्तमान हो सकती है?
    ....

13. क्या यह कलीसिया एक सम्प्रदाय है?
....

14. क्या पृथ्वी पर इसका कोई प्रधान या प्रधान कार्यालय है?
....

15. कलीसिया के शत्रु कौन है?
....

16. उनके हथियार क्या है?
....

17. क्या प्रभु की कलीसिया सदा से ही विजयी रही है?
....

18. यीशु मसीह किस के लिये वापस आ रहा है?
....

19. हमारा क्या निवेदन है?
....

20. बताइए कि मसीही बनने व मसीही की कलीसिया का सदस्य होने के लिये क्या करना चाहिए?
....

लिखिए सत्य या झूठ :

1. जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया वह आज भी वर्तमान है। ....
2. केवल एक ही सच्ची कलीसिया है। ....
3. यह अपने ऊपर मसीह का नाम रखती है। ....
4. उद्धार प्राप्त करने के लिये इसका सदस्य बनना आवश्यक है। ....
5. यीशु मसीह अपनी कलीसिया के लिये एक दिन वापस आ रहा है। ....

* * *

सारे प्रश्न पृष्ठों को पुस्तक से अलग करके हमारे पास जांचने के लिये भेज दें।

आपका नाम : ....

....

आपका पता : ....

....

....

आपका मोबाइल नं. : ....

आपको हमारा यह अध्ययन कैसा लगा? अपनी राय हमें लिखकर भेजिये।

* * *

यदि कोरियर से भेजना चाहते हैं तो हमारा पता है:

चर्च ऑफ क्राईस्ट
मार्केट नं. 4, सी. आर. पार्क,
नई दिल्ली-110019

प्रश्न पृष्ठों को भरकर पुस्तक से अलग करके आप डाक द्वारा इस पते पर भेज सकते हैं:

विनय डेविड
पोस्ट बॉक्स-4398
नई दिल्ली-110019

बाइबल शिक्षा देती है कि एक मसीही बनने के लिये आपको क्या करना है...

6 बपतिस्मा लेना या जल में गाड़े जाना
मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38

5 यीशु का अंगीकार करना
मत्ती 10:32–33;
रोमियों 10:9–10

4 पापों से मन फिराना
लुका 13:3; प्रेरितों 17:30

3 विश्वास करना अर्थात् यीशु में विश्वास लाना
यूहन्ना 8:24; इब्रा. 11:6

2 सुसमाचार को सुनना
रोमियों 10:17; प्रेरितों 8:5–6; 12:13

1 मनुष्य बिना किसी आशा के एक पापी संसार में खोया हुआ है
रोमियों 3:10, 23; इफि. 2:12; यूहन्ना 15:1–8

बपतिस्मा लेने के बाद, तब क्या?

लूका 8:5-15

याद रखने योग्य बातें

आप मसीह में अभी एक बच्चे हैं

1 पतरस 2:2; 1 कुरि. 3:1

अब आपका जीवन बदल गया है

2 कुरि. 5:17; पतरस 1:22-23

आपको आगे बढ़ना आवश्यक है

2 पतरस 1:5-12; 2 पतरस 3:18

विश्वास से गिरने की संभावना है

गलातियों 5:4-1; 1 यूहन्ना 2:1-2

अपने जीवन से आप यीशु मसीह को दिखाते हैं

1 तीमु. 4:12; 2 कुरि. 3:2

आपको यीशु का अनुसरण करना है

1 पतरस 2:21; इब्रा. 12:1-2

और मृत्यु तक विश्वासयोग्य बनकर रहना है

प्रकाशित. 2:10

बपतिस्मा लेने के बाद, आपको क्या करना है?

लूका 8:5-15

परमेश्वर चाहता है कि आप उसको पहला स्थान दें

मत्ती 6:33; मत्ती 22:37; मत्ती 10:37

अध्ययन करें: उसके वचन को पढ़ें

2 तीमु. 2:15; प्रेरितों 17:11; 2 पतरस 3:18

उसकी आज्ञा को मानें

मत्ती 7:21; इब्रा. 5:8, 9; लूका 6:46

प्रार्थना में उससे बातचीत करें

फिलि. 4:6-7; 1 थिस्स. 5:17; 1 तीमु. 2:8

मन से उसकी आराधना करें

यूहन्ना 4:24; प्रेरितों 20:7; 10:25-27

दूसरो को वचन सिखाएं तथा उन्हें प्रभु के पास लायें

मत्ती 28:19-20; मरकुस 16:15; यूहन्ना 15:1-8